वर्ष-12//अंक-33//जून// 2024

ISSN 2454–5805

आम आदमी पत्रिका®

एक आम इंसान की सोच

RNI NO.: CHHHIN/2013/50684

'सरकार' तीसरी बार

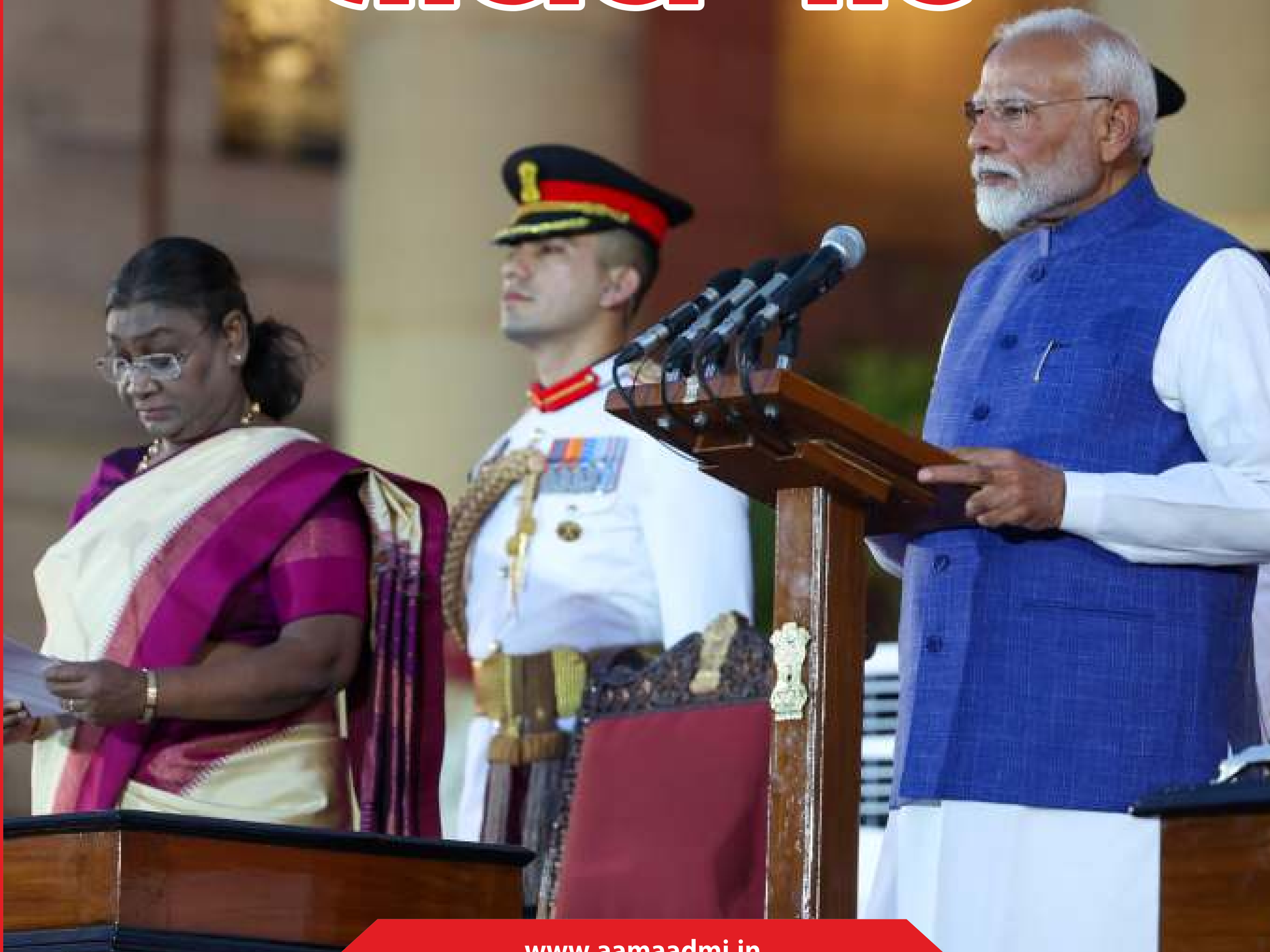

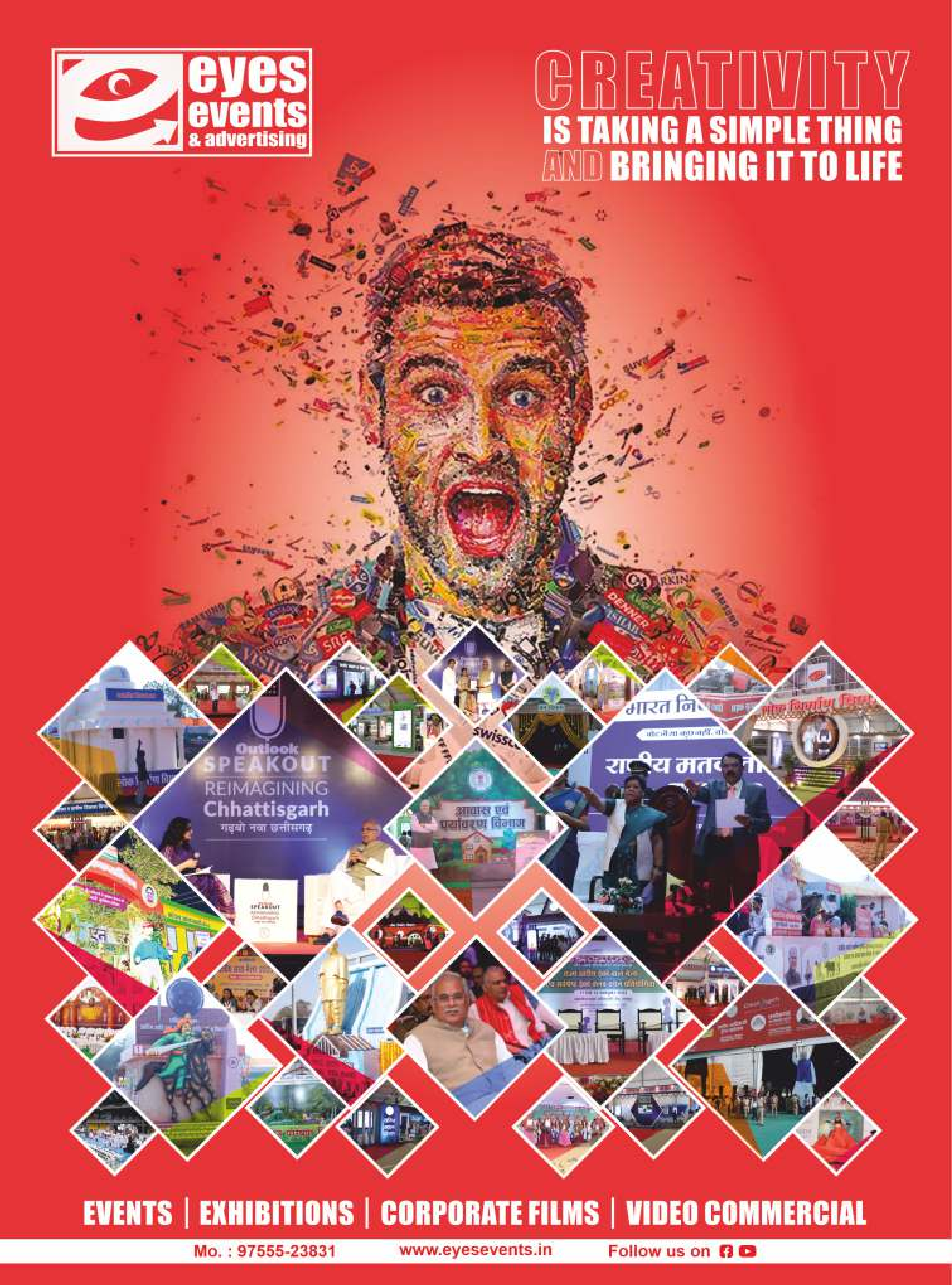
eyes
events
& advertising
CREATIVITY
IS TAKING A SIMPLE THING
AND BRINGING IT TO LIFE
Outlook
SPEAKOUT
REIMAGINING
Chhattisgarh
गढ़बो नवा छत्तीसगढ़
आवास एवं
पर्यावरण विभाग
EVENTS | EXHIBITIONS | CORPORATE FILMS | VIDEO COMMERCIAL
Mo. : 97555-23831
www.eyesevents.in
Follow us on

आम आदमी पत्रिका

वर्ष-12//अंक-33//जून//2024

प्रबंध संपादक	:	उमेश के बंसी
सर्कुलेशन इंचार्ज	:	प्रकाश बंसी
रिपोर्टर	:	नेहा श्रीवास्तव
कंटेंट राईटर	:	प्रशांत पारीक
क्रिएटिव डिजाइनर	:	देवेन्द्र देवांगन
मैग्ज़ीन डिज़ाइनर	:	जितेन्द्र साहू
मार्केटिंग मैनेजर	:	किरण नायक
एडमिनिस्ट्रेशन	:	कुसुम श्रीवास्तव
अकाउंट असिस्टेंट	:	प्रियंका सिंह
ऑफिस कॉर्डिनेटर	:	योगेन्द्र बिसेन

प्रधान कार्यालय

54/111, सालासर बालाजी मंदिर के पास, अग्रसेन धाम के पीछे, वी.आई.पी.रोड, रायपुर (छ.ग.)

फोन : 0771-4044047

ईमेल : khabar@aamaadmi.in

कार्यालय

प्लाट नं.118, कंचन बाग, राजनांदगांव

प्रकाशक

उमेश कुमार बंसी, क्वाटर नंबर 10, एम.एम. रियल स्टेट कॉलोनी, अमलीडीह, रायपुर (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित एवं मुद्रित

विशेष- इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में दिये गए विचार, लेखकों के अपने है। इसमें संपादक / मुद्रक की सहमति अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद की स्थिति में संपादक / मुद्रक जिम्मेदार नहीं होगा। इस पत्रिका से संबंधित किसी भी विवाद के लिए सुनवाई क्षेत्र रायपुर न्यायालय होगा।

अनुक्रमणिका

जून 2024

इस अंक में

नई दिल्ली. लोकसभा चुनाव के नतीजों से भाजपा को बड़ा झटका लगा है. गठबंधन के सहारे उसने बहुमत तो हासिल कर लिया है, लेकिन जिस तरह से पार्टी ने चुनाव अभियान चलाया था और जो दावे किए थे उनसे वह बहुत दूर रह गई. यहां तक कि भाजपा को अपने दम पर बहुमत भी नहीं मिल सका, जो कि उसने 2014 व 2019 के आम चुनाव में हासिल किया था.

16

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ की 10 सीटों पर बीजेपी की जीत 06

रायपुर. लोकसभा चुनाव 2024 में छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में बीजेपी ने 2019 के प्रदर्शन को दोहराते हुए कांग्रेस की उम्मीदों पर पानी फेर दिया है. प्रदेश की 11 लोकसभा सीटों में 10 में बीजेपी को जीत मिली है

कमल और हाथ का मत प्रतिशत बढ़ा, कांग्रेस ने सीटें भी बढ़ाई 07

नई दिल्ली. लोकसभा के इस चुनाव में भाजपा और कांग्रेस दोनों के मतों में बढ़ोतरी हुई है. बावजूद इसके, कांग्रेस की सीटें बढ़ीं, लेकिन भाजपा को नुकसान हुआ है.

लोकसभा में 280 पहली बार कई अभिनेता व पूर्व सीएम भी 27

नई दिल्ली. 18वीं लोकसभा के चुनाव की इसे एक अहम उपलब्धि माना जा सकता है कि 543 सीटों में से 280 सदस्य पहली बार संसद के निचले सदन में कदम रखेंगे. इनमें से कई पहले से राजनीति में हैं

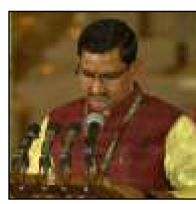

बिलासपुर सांसद तोखन साहू ने ली केंद्रीय राज्यमंत्री की शपथ 30

नई दिल्ली. बिलासपुर लोकसभा सांसद तोखन साहू ने मोदी मंत्रिमंडल में केंद्रीय राज्यमंत्री के रूप में शपथ ली.

उत्तर भारत में फिर गठबंधन की गूंज 34

इस बार का लोकसभा चुनाव अंकुश लगाने वाला साबित हुआ है. लगातार दो बार अपने बूते बहुमत पाने वाली भाजपा मानो थम गई है. लोगों के मन में चुनाव से पहले कई तरह की आशंकाएं थीं.

इंडिया गठबंधन का आदिवासी सीटों पर कब्जा 37

रांची. लोकसभा चुनाव 2024 के परिणामों ने पूरे देश के साथ झारखंड को भी चौंकाया है. अंतिम परिणाम ओपिनियन और एग्जिट पोल के उलट रहे.

जनादेश का संदेश

उमेश के बंसी
(प्रबंध संपादक)

अठारहवीं लोकसभा चुनाव के परिणाम न केवल चौंकने, बल्कि सोचने पर भी मजबूर कर रहे हैं. कोई बहुत बड़ा उलट-फेर नहीं है, पर जो हुआ है, उसकी तरह-तरह से विवेचना संभव है. अगर शुद्ध गणितीय दृष्टि से देखें, तो कुल मिलाकर, केंद्र में सत्तारूढ़ प्रमुख पार्टी को जोर कम हुआ है. चार सौ पार पहुंचने का उसका मनसूबा पूरा नहीं हुआ. पिछले चुनाव में भाजपा को अकेले ही 303 सीटों के साथ भारी बहुमत मिला था, पर इस बार बहुमत दरकता दिखा है. वैसे, भारत जैसे राजनीतिक, सामाजिक विविधता वाले देश में यह कोई कम बड़ी बात नहीं कि एक पार्टी-एक नेता नरेंद्र मोदी लगातार दो बार सत्ता में रहने के बावजूद तीसरी दफा भी मिले-जुले जनादेश के बाद सरकार बनाने में सक्षम हो गए हैं. उन्हें न जाने क्या-क्या कहा गया, लेकिन व्यापकता में लोगों की नजरों में वह अभी भी देश के नंबर वन नेता हैं. हां, यह जरूर है कि साल 2014 और साल 2019 के चुनाव में भाजपा को अकेले ही बहुमत हासिल था और अन्य सहयोगियों के साथ वह बहुत आसानी से दस साल तक सरकार चला पाई. अब ताजा चुनावी नतीजे पहला इशारा तो यही कर रहे हैं कि तीसरी बार भाजपा को सरकार चलाने में उतनी सुविधा नहीं होगी. मतलब, देश में दस साल बाद फिर गठबंधन पर निर्भरता का दौर लौट आया है.

विपक्ष के नजरिये से अगर परिणामों को देखा जाए, तो यह एक बड़ी कामयाबी है कि प्रमुख विपक्षी गठबंधन के पास सवा दो सौ से ज्यादा सीटें हैं. लोकसभा चुनाव 2019 में विपक्षी गठबंधन यूपीए के पास 92 सीटें थीं, पर अब इंडिया ब्लॉक के पास इतनी सीटें हैं कि वह मजबूती के साथ सत्ता पक्ष को चुनौती दे सकता है. पिछले चुनाव में समाजवादी पार्टी विपक्ष में तो थी, पर कांग्रेस के साथ नहीं थी, इस बार कांग्रेस के साथ उसका होना खासतौर पर उत्तर प्रदेश में रंग लाया है. इस चुनाव में समाजवादी पार्टी के साथ ही कांग्रेस को भी बहुत लाभ हुआ है. समाजवादी पार्टी देश में तीसरे नंबर की पार्टी बनकर उभरी है, तो देश में दूसरे नंबर की पार्टी के रूप में कांग्रेस ने अपने प्रदर्शन को बहुत सुधारा है. पिछले दो चुनावों में वह 44 और 52 सीटों पर सिमट गई थी, जिससे मुख्य विपक्षी पार्टी और नेता प्रतिपक्ष का आधिकारिक दरजा भी उसे नहीं मिल सका. इस बार कांग्रेस के पास 20 प्रतिशत के करीब सीटें हैं और उसे मुख्य विपक्षी होने का आधिकारिक दर्जा मिल जाएगा. अत लोकसभा में कांग्रेस के पास एक नई शुरुआत करने का मौका है.

गौर करने की बात है कि इस चुनाव में गठबंधन की बहुत बड़ी भूमिका रही है. जहां, भाजपा इस बार गठबंधन के मोरचे पर कमजोर थी, वहीं कांग्रेस ने आगे बढ़कर गठबंधन किया. यहां यह याद कर लेना जरूरी है कि गठबंधन करके आगे बढ़ने के प्रति कांग्रेस जब गंभीर नहीं थी, तब उसे सियासी नुकसान हुआ था और देश में प्रमुख दल होने का उसका गौरव भी छिन गया था. इस बार चुनाव से पहले कांग्रेस ने गठबंधन के प्रति पर्याप्त गंभीरता दिखाकर एक नए प्रकार की राजनीतिक संस्कृति को जन्म दिया है, यह संस्कृति भले ही भाजपा को उखाड़ फेंकने के लिए खड़ी हुई, पर लगता है, आने वाले कुछ वर्षों में विपक्षी गठबंधनों के लिए यही तरीका मुफीद है. जहां तक सत्ता पक्ष की बात है, समर्थन में आई कमी सोचने का अवसर है और यह सोचना तब ज्यादा सार्थक होगा, जब जनता के अनुरूप और अच्छी नीतियों के साथ कामकाज में सुधार किया जाएगा.

सरकार तीसरी बार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित 72 मंत्रियों ने शपथ ली

नई दिल्ली. पूरे आत्मविश्वास के साथ नरेंद्र मोदी ने रविवार को लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ ली. राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई. राष्ट्रपति भवन के प्रांगण में आयोजित भव्य कार्यक्रम में प्रधानमंत्री को मिलाकर कुल 72 सदस्यों ने शपथ ली. इनमें 30 कैबिनेट मंत्री, पांच राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और 36 राज्यमंत्री शामिल हैं.

पंडित जवाहर लाल नेहरू के बाद लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेकर मोदी ने इतिहास रचा है.

जदयू-तेदेपा से दो-दो मंत्री बनाए गए

मोदी की नई मंत्रिपरिषद में घटक दल जदयू से राजीव रंजन सिंह उर्फ लल्लन सिंह को कैबिनेट मंत्री जबकि रामनाथ ठाकुर को राज्यमंत्री बनाया गया. लोकजनशक्ति पार्टी (रामविलास) से चिराग पासवान कैबिनेट मंत्री होंगे. वहीं, तेदेपा से के. राममोहन नायडू कैबिनेट और चंद्रशेखर पेम्मासानी राज्य मंत्री बनाए गए हैं. जद-एस से एचडी कुमारस्वामी को मंत्री बनाया गया है.

दिल्ली से सिर्फ हर्ष मल्होत्रा को मौका

मंत्रिमंडल में दिल्ली से सिर्फ हर्ष मल्होत्रा को जगह मिल सकी. उत्तर प्रदेश से दस मंत्री शामिल किए गए जिनमें तीन चेहरे नए हैं. सरकार में एनसीपी (अजित पवार) शामिल नहीं हुई है. महाराष्ट्र में उपमुख्यमंत्री अजित पवार ने कहा, फिलहाल वह कैबिनेट में शामिल नहीं हो रहे हैं. वहीं, प्रफुल्ल पटेल ने कहा कि उन्हें राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार के लिए सूचना मिली है, लेकिन वह पहले कैबिनेट मंत्री रहे हैं. इसलिए, उन्होंने इसे अस्वीकार कर दिया.

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ की 10 सीटों पर बीजेपी की जीत

रायपुर. लोकसभा चुनाव 2024 में छत्तीसगढ़ मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में बीजेपी ने 2019 के प्रदर्शन को दोहराते हुए कांग्रेस की उम्मीदों पर पानी फेर दिया है. प्रदेश की 11 लोकसभा सीटों में 10 में बीजेपी को जीत मिली है जबकि कांग्रेस को सिर्फ एक सीट पर संतोष करना पड़ा.

कांग्रेस की झोली में कोरबा की सीट आई है जहां से ज्योत्सना चरणदास महंत ने 43283 वोटों से जीत हासिल की. राज्य के पूर्व सीएम भूपेश बघेल समेत कांग्रेस के कई बड़े चेहरे पार्टी को जीत दिलाने में सफल नहीं हो पाए. दूसरी ओर, बीजेपी को सरगुजा, रायगढ़, जांजगीर-चांपा, राजनंदगांव, दुर्ग, रायपुर, महासमुंद, बस्तर, कांकेर और बिलासपुर में जीत मिली है.

बीजेपी ने रायगढ़ और सरगुजा सीट पर परचम लहराया है. रायगढ़ से राधेश्याम राठिया और सरगुजा से चिंतामणि महाराज ने जीत हासिल कर ली है. रायपुर से मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने भी जीत हासिल कर ली है. हाईप्रोफाइल सीट दुर्ग में भी बीजेपी के विजय बघेल ने जीत हासिल कर ली है.

वहीं बस्तर से कांग्रेस से दिग्गज नेता कवासी लखमा को हार का सामना करना पड़ा है. यहां से बीजेपी के महेश कश्यप ने जीत हासिल कर ली है. महासमुंद से भाजपा प्रत्याशी रूपकुमारी चौधरी और जांजगीर-चांपा से कमलेश जांगड़े ने जीत हासिल कर ली है. तो वहीं कांकेर सीट से भोजराज नाग, बिलासपुर से तोखन साहू ने जीत हासिल कर ली है. लंबे इतजार के बाद कांग्रेस का भी खाता आखिरकार खुल गया है. कोरबा सीट पर कांग्रेस की ज्योत्सना महंत ने जीत हासिल कर ली है.

कमल और हाथ का मत प्रतिशत बढ़ा, कांग्रेस ने सीटें भी बढ़ाई

नई दिल्ली. लोकसभा के इस चुनाव में भाजपा और कांग्रेस दोनों के मतों में बढ़ोतरी हुई है. बावजूद इसके, कांग्रेस की सीटें बढ़ीं, लेकिन भाजपा को नुकसान हुआ है. हालांकि, वह अकेले ही इंडिया गठबंधन की कुल सीटों से ज्यादा हासिल कर आगे है. 2024 के चुनाव में भाजपा को 36.70 वोट मिले, जबकि कांग्रेस को 21.38(+2) फीसदी वोट मिले हैं.

कांग्रेस इस चुनाव में सबसे कम सीटों (328) पर चुनाव लड़ी. इसके बाद भी पार्टी के वोट शेयर में लगभग दो फीसदी की बढ़ोतरी हुई. कांग्रेस को 99 सीटें मिली हैं, यानी 47 सीटों का लाभ हुआ है. 2019 में कांग्रेस को 19.49 फीसदी वोट और कुल 52 सीटें मिली थी. वहीं, 2014 के चुनाव में कांग्रेस को 19.31 वोट और 44 सीटें मिली थीं. 2024 में कांग्रेस को 13.55 करोड़ से अधिक मत पड़े.

यूपी में वापसी कांग्रेस ने उत्तर प्रदेश में भी शानदार वापसी की है. उसकी इस जीत में समाजवादी पार्टी का बड़ा योगदान है. यहां कांग्रेस को 9.52 फीसदी वोट मिले. 2019 में महज एक सीट राजबरेली जीतने वाली कांग्रेस ने छह सीटों पर जीत दर्ज की. 2019 में कांग्रेस महज एक सीट रायबरेली जीत पाई थी, जबकि अमेठी सीट से खुद राहुल गांधी चुनाव हार गए थे.

भाजपा का प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक नहीं पर सब पर भारी भाजपा के उम्मीदों मुताबिक परिणाम नहीं रहा, हालांकि उसके वोट शेयर में मामूली ही सही, लेकिन बढ़ोतरी हुई है. 2019 के चुनाव में भाजपा ने 36.37 वोट के साथ 303 सीटों पर जीत दर्ज की थी. उक्त चुनाव में भाजपा को 22.90 करोड़ से अधिक मत प्राप्त हुआ था. 2024 के चुनाव में भाजपा को 36. 70 फीसदी वोट मिले और 23 करोड़ 26 लाख से अधिक मत प्राप्त हुए. 2024 में भाजपा को 239 सीटों पर जीत की ओर बढ़ रही है.

उत्तर प्रदेश में सबसे बड़ा नुकसान उठाना पड़ा

भाजपा को सबसे बड़ा नुकसान उत्तर प्रदेश में उठाना पड़ा है. 2019 में भाजपा ने लगभग 50 फीसदी मत पाकर 63 सीटों पर जीत दर्ज की थी, वहीं, 2024 के चुनाव में 41.59 फीसदी वोट पाकर पार्टी महज 33 सीटों पर सिमट गई है.

समाजवादी पार्टी ने किया चमत्कार

उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी ने चमत्कार कर दिया. समाजवादी पार्टी 2019 में महज पांच सीटों पर सिमट गई थी, वहीं पार्टी 2024 के चुनाव में 33.03 फीसदी वोट पाकर 37 सीटों पर जीत दर्ज की है. वहीं, बसपा खाता भी नहीं खोल पाई.

छत्तीसगढ़ सहित दूसरे राज्यों में भी चला CM साय का जादू, लोग दे रहे हैं सुपर स्ट्राइकर सीएम की संज्ञा

> देश में हुए लोकसभा चुनाव के परिणाम आ चुके हैं. छत्तीसगढ़ में 10 सीटों सहित पूरे देश में भाजपा नीत एनडीए गठबंधन ने 293 सीटों पर जीत हासिल की है. इसके साथ ओडिशा विधानसभा चुनाव में पहली बार भाजपा ने बहुमत हासिल किया है, तो दूसरी ओर आंध्रप्रदेश विधानसभा चुनाव में भी एनडीए गठबंधन को पूर्ण बहुमत हासिल हुई है.

छत्तीसगढ़ सहित मध्यप्रदेश और ओडिशा में भाजपा की प्रचंड जीत में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का अहम योगदान रहा. उन्होंने जहां-जहां सभाएं की वहां अधिकतर जगहों में भाजपा का परचम लहराया. साय का छत्तीसगढ़ में 91 प्रतिशत, मध्यप्रदेश में 100 प्रतिशत और ओडिशा में 86 प्रतिशत सक्सेस स्ट्राइक रेट रहा. इसलिए लोग अब विष्णु देव साय को सुपर स्ट्राइकर सीएम की संज्ञा दे रहे हैं.

यह जीत संगठन की मेहनत और जनता के आशीर्वाद का प्रतिफल है - सीएम साय

''मेहनत का कोई विकल्प नहीं'' का सूत्र वाक्य अंगीकार कर चुनावी महासमर में सफलता के नए आयाम तक पहुंचने वाले सीएम साय इसका श्रेय संगठन के कार्यकर्ताओं और जनता को देते हैं. उनका कहना है कि भीषण गर्मी की परवाह न कर कार्यकर्ताओं ने बहुत मेहनत की. संगठन के हर नेता ने अपना सर्वश्रेष्ठ दिया, जिसका नतीजा सामने है.

वह यह नहीं बताते कि पूरे चुनावी यात्रा में उसी भीषण गर्मी से उन्हें भी दो-चार होना पड़ा. अपनी मेहनत पर उन्हें चर्चा पसंद नहीं वे इसे अपना कर्तव्य मानते हैं. जनता से मिले आशीर्वाद को सिर झुका कर स्वीकार करने वाले सीएम साय की यही नम्रता और सरलता उनके सियासी कद को बड़ा बनाती है.

छत्तीसगढ़ में 91 प्रतिशत रहा सक्सेस स्ट्राइक रेट

छत्तीसगढ़ की सभी 11 लोकसभा सीटों में श्री साय ने कुल 64 जनसभाएं एवं रोड शो की. जहाँ उन्होंने बस्तर लोकसभा में 7 जनसभा और रोड शो किया. दूसरे चरण के अंतर्गत कांकेर, राजनांदगांव और महासमुंद में कुल 15 जनसभाएं की. इन चारों लोकसभा सीटों में भाजपा ने जीत दर्ज की. तीसरे चरण की बची हुई 7 सीटों रायपुर, दुर्ग, बिलासपुर, जांजगीर-चांपा, रायगढ़, सरगुजा और कोरबा में सीएम साय ने कुल 42 जनसभाएं की. जिसमें कोरबा लोकसभा में मामूली अंतर से हुई हार को छोड़ दें तो ग्यारह में से 10 सीटों पर भाजपा ने जीत दर्ज की और अपना परचम लहराया.

अगर इसका विजयी प्रतिशत निकालें तो मुख्यमंत्री साय की सभाओं का सक्सेस रेट 91 प्रतिशत रहा. मतलब सीएम साय सुपर स्ट्राइकर साबित हुए और अपने तूफानी दौरों की बदौलत से कांग्रेस के पसीने छुड़ा दिए. अपनी हर सभा में कांग्रेस को सबक सिखाने की बात करने वाले सीएम साय ने कांग्रेस को गहरा सबक सिखाया.

ओडिशा के 86 प्रतिशत सक्सेस स्ट्राइक रेट ने बढ़ाया सीएम साय का सियासी कद

सीएम साय ने ओडिशा में भी जमकर पसीना बहाया. यहाँ सात लोकसभा सीटों में उन्होंने तूफानी जनसभाएं ली और भाजपा को 6 लोकसभा सीट बरगढ़, बलांगीर, कालाहांडी, नबरंगपुर, संबलपुर और सुंदरगढ़ सीटें जिताकर दी. विधानसभा स्तर पर भी यदि देखें तो यहाँ झारसुगुड़ा, कोटपाड़, उमरकोट, कोरापुट, तलसरा, बीजेपुर, बीरमहाराजपुर और कुचिंदा सीट को मिलाकर कुल आठ विधायक भी जिताने में वो कामयाब रहे. यहाँ लोकसभा चुनाव में उनका सक्सेस स्ट्राइक रेट 86 प्रतिशत रहा.

बता दें कि ओडिशा की अपनी हर जनसभा में श्री साय वहां की बीजेडी सरकार और कांग्रेस पार्टी के खिलाफ मुखर रहे. उन्होंने ओडिशा की जनता को भाजपा द्वारा दी गई गारंटियों को बड़े ही विस्तार से बताया. नवीन पटनायक को रिमोट कंट्रोल सीएम और कांग्रेस को आदिवासियों का विरोधी बताते हुए ओडिशा के विकास में बाधक होने की बात कही. ओडिशा में श्री साय की हर जनसभाओं में जनता की भारी भीड़ उमड़ी, जो चुनाव में भाजपा के पक्ष में वोट के रूप में फलीभूत हुई.

मध्यप्रदेश में 100 प्रतिशत रहा सक्सेस स्ट्राइक रेट

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने पड़ोसी राज्य मध्यप्रदेश में भी 8 जनसभाएं की. जिसमें कुल चार लोकसभा सीट खजुराहो, शहडोल, मंडला, सीधी में उन्होंने मोर्चा संभाला. इन चारों सीटों पर भी भाजपा ने बम्पर मतों से जीत हासिल की है. इसमें मुख्यमंत्री की सभाओं का सक्सेस रेट देखें तो पूरे सौ प्रतिशत का सक्सेस रेट है.

विष्णु ने जिम्मेदारियों का किया निष्ठा पूर्वक निर्वहन

केंद्रीय भाजपा द्वारा मिली जिम्मेदारियों का निष्ठापूर्वक निर्वहन करते हुए विष्णु देव साय छत्तीसगढ़, ओडिशा और मध्यप्रदेश में भाजपा की प्रचंड जीत में अहम किरदार साबित हुए और मोदी जी की रणनीति को सफल बनाने में कामयाब हुए. इससे उनके सियासी कद में वृद्धि हुई, इसमें कोई संदेह नहीं है.

दिल्ली में फिर भगवा लहराया

नई दिल्ली. दिल्ली में एक बार फिर भाजपा ने लोकसभा चुनाव में जीत का परचम लहराया है. राजधानी की सभी सातों सीटों पर भारतीय जनता पार्टी ने लगातार तीसरी बार बड़े अंतर से जीत दर्ज की है.

इस चुनाव में भाजपा को 54.34 फीसदी और इंडिया गठबंधन 43.08 फीसदी वोट मिले. आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के साथ आने के बाद भी भाजपा ने अपनी जीत बरकरार रखी.

गठबंधन बेअसर

दिल्ली में भाजपा को पटखनी देने के लिए पहली बार आम आदमी पार्टी व कांग्रेस एक साथ मिलकर चुनाव लड़ रहे थे. आप ने चार और कांग्रेस ने तीन सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे. वहीं,भाजपा ने गठबंधन से निपटने के लिए सात में से छह मौजूदा सांसदों के टिकट काटकर नए चेहरों को मौका दिया. हालांकि, आप और कांग्रेस को गठबंधन का लाभ नहीं हुआ. वर्ष 2019 (56.9 फीसदी) के मुकाबले भाजपा को इस बार ढाई फीसदी वोटों का नुकसान हुआ. वहीं, गठबंधन के बाद भी आप और कांग्रेस के मत प्रतिशत में महज तीन फीसदी का इजाफा हुआ. वर्ष 2019 में आप व कांग्रेस को मिलाकर कुल 40.6 फीसदी मत मिले थे.

उत्तर-पश्चिमी सीट पर सबसे बड़ी जीत

दिल्ली में सबसे बड़ी जीत सुरक्षित सीट उत्तर-पश्चिमी दिल्ली पर हुई. यहां पर भाजपा के योगेंद्र चंदोलिया ने कांग्रेस के डॉ. उदित राज को 2.90 लाख से अधिक मतों से हराया. डॉ. उदित राज की इस सीट पर लगातार दूसरी हार है. वर्ष 2019 में वह कांग्रेस के टिकट पर इसी सीट से हार गए थे.

राजधानी से पहली बार दो महिलाएं सांसद पहुंची

दिल्ली से पहली बार दो महिलाएं बांसुरी स्वराज और कमलजीत सहरावत संसद में पहुंचीं. आमतौर पर इससे पहले एक ही महिला सांसद दिल्ली से चुनी जाती थी.

आप के तीन विधायक हारे इस बार चार मौजूदा विधायक लोकसभा चुनाव लड़े. भाजपा के बदपुर से विधायक रामवीर सिंह बिधूड़ी दक्षिणी दिल्ली जीते. मगर आम आदमी पार्टी के विधायक सहीराम दक्षिणी दिल्ली, कोंडली से विधायक कुलदीप कुमार पूर्वी दिल्ली व मालवीय नगर से विधायक सोमनाथ भारती को नई दिल्ली सीट से हार गए.

महेश शर्मा, अतुल गर्ग भरोसे पर खरे उतरे

गौतमबुद्ध नगर सीट पर भाजपा प्रत्याशी डॉ. महेश शर्मा ने जीत की हैट्रिक लगाई है. उन्होंने 5 लाख 59 हजार 472 मतों से सपा प्रत्याशी डा. महेन्द्र नागर को हराया. गाजियाबाद से भाजपा प्रत्याशी अतुल गर्ग ने कांग्रेस प्रत्याशी डॉली शर्मा को 3 लाख 36 हजार 965 मतों से हराया.

गुरुग्राम-फरीदाबाद में भी जीत का परचम

भाजपा प्रत्याशी कृष्णपाल गुर्जर ने फरीदाबाद सीट पर कांग्रेस के महेंद्र प्रताप सिंह को एक लाख 72 हजार 914 मतों से हराया. गुरुग्राम में भाजपा के राव इंद्रजीत सिंह ने कांग्रेस के राज बब्बर को 75,079 मतों से पटखनी दी.

अपने कार से पहाड़ों पर घूमने जाने की तैयारी ? तो ड्राइविंग के समय इन जरूरी चीजों का रखें ध्यान

देश के अधिकांश शहरों में लोग गर्मी की मार झेल रहे हैं. ऐसे में वीकेंड और छुट्टियों होते ही कई लोग पहाड़ों पर निकल जाते हैं. लोग न केवल भीषण गर्मी में झुलसने के बाद ठंडक पाने के लिए, बल्कि ताजी हवा में सांस लेने औ प्राकृतिक सुंदरता को देखने लिए हिल स्टेशन की ओर रुख करते हैं. हालांकि, ऐसी जगह कार ड्राइव करना थोड़ा मुश्किल होता है. आइए, पहाड़ियों पर ड्राइविंग के दौरान ध्यान रखने वाले जरूरी टिप्स जान लेते हैं.

सही समय पर सर्विस जरूरी

अगर आप कार से पहाड़ों की यात्रा पर जा रहे हैं तो जाने से कुछ दिन पहले कार की सर्विस कराएं. अक्सर देखा गया है कि लोग बिना किसी तैयारी के कार लेकर पहाड़ पर चले जाते हैं. इसके बाद कार बीच रास्ते में खराब हो जाती है, ऐसे में सफर का सारा मजा खराब हो जाता है. अगर आप कार की सही समय पर सर्विस कराएंगे तो कार में आने वाली छोटी-मोटी दिक्कत समय पर ठीक हो जाएगी.

पहिया का संतुलन होना चाहिए सही

कार के साथ पहाड़ की यात्रा करने से पहले आपको कार के पहिए का संतुलन चेक कर लेना चाहिए. कई बार कार के पहिए का संतुलन बिगड़ जाता है, इस वजह से कार का पहिया गलत दिशा में जाता है. कार की इस परेशानी को जांचने के लिए आप कार के स्टीयरिंग को कुछ सेकेंड के लिए छोड़ दें. इसके बाद अगर कार का पहिया सीधा चलता है तो ठीक है. वहीं, कार का पहिया लेफ्ट और राइट साइड पर जाता है तो फिर पहियों में दिक्कत है. इस परेशानी को किसी अच्छे मैकेनिक से ठीक करवाएं.

पहाड़ी सड़कों पर सुरक्षित ड्राइविंग

पहाड़ों में बर्फ के बीच ड्राइविंग करना सर्दियों में निचले इलाकों में ड्राइविंग के समान नहीं है. हालांकि यदि आप कुछ टिप्स को अपनाएंगे तो आपको थोड़ी आसानी होगी.

स्पीड को धीमा रखे

तेज गति के कारण आप गाड़ी से कंट्रोल खो सकते हैं, इसलिए स्पीड कम रखें.

ऑटो ड्राइविंग फीचर्स को बंद करे

जब सड़कें सूखी हों तो लेन कीप असिस्ट जैसे फीचर्स अच्छे हो सकते हैं. लेकिन बर्फ और बर्फबारी में, ये समस्या पैदा कर सकते हैं.

लो गियर में शिफ्ट करे

यदि आपकी गाड़ी AWD मॉडल नहीं है, तो लो गियर (D से 2) में शिफ्ट करने से आपके ट्रांसमिशन का घूमना धीमा हो जाएगा, जिससे ब्रेक लगाए बिना गाड़ी धीमी हो जाएगी.

टायरों की जांच करे

जैसे-जैसे तापमान और ऊंचाई में बदलाव होता है, वैसे-वैसे आपके टायरों में प्रेशर भी बदलता है. सुनिश्चित करें कि वे बेहतर ग्रिप के लिए, निर्माता कंपनी के सुझाए गए पीएसआई मानकों के अनुसार हवा भारी हो.

लाइटें चालू रखे

यदि आपकी गाड़ी में डे टाइम रनिंग लाइट नहीं हैं, तो अपने हेडलैंप चालू करें ताकि आप ज्यादा बेहतर तरीके से देख सकें.

ब्रेक का करें सही से इस्तेमाल

कभी भी आपको अचानक से तेज ब्रेक नहीं दबाना चाहिए, इससे गाड़ी फिसल सकती है जिसे आप कंट्रोल नहीं कर सकते. इसके बजाय, धीरे से ब्रेक लगाएं और गाड़ी को धीमा करने के लिए अपने ट्रांसमिशन को डाउन शिफ्ट करें.

पहाड़ियों पर न रुके

ढलान पर चढ़ते समय रुकने से आपको अपनी स्पीड को वापस पाना मुश्किल हो सकता है और आप पीछे की ओर लुढ़क सकते हैं.

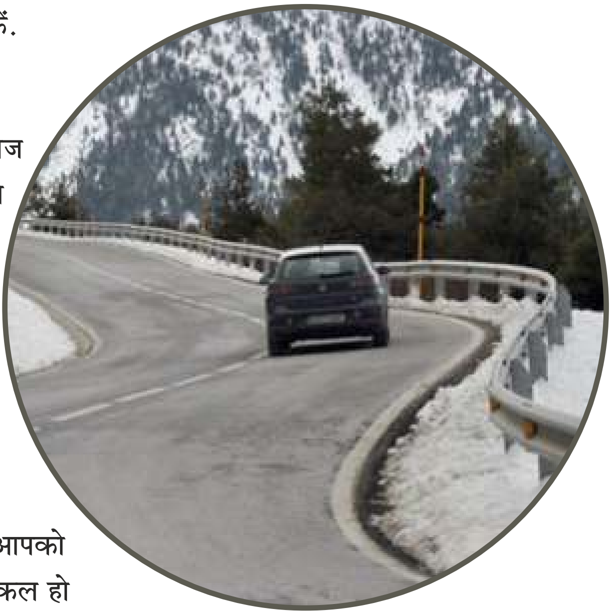

भाजपा को सहयोगियों का बड़बोलापन भारी पड़ा

लखनऊ. भाजपा नेतृत्व वाले एनडीए का हिस्सा प्रदेश के तीन छोटे दल इस चुनाव में औंधे मुंह गिरे हैं. इन तीनों दलों के नेताओं का बड़बोलापन ही इन्हें भारी पड़ा है.

पूर्वांचल, बुंदेलखंड और मध्य उत्तर प्रदेश में जातीय राजनीति के ठेकेदार के रूप में खुद को प्रचारित करने वाले सुभासपा, निषाद पार्टी और अपना दल (सोनेलाल) के नेताओं की मौकापरस्ती को मतदाताओं ने बेनकाब करने का काम किया है. इन दलों को समझौते में मिली चार सीटों में से महज मिर्जापुर सीट पर अद (एस) की अध्यक्ष केंद्रीय राज्यमंत्री अनुप्रिया पटेल ही लगातार तीसरी बार चुनाव जीतने में सफल रही हैं.

पूर्वांचल, बुंदेलखंड व मध्य उत्तर प्रदेश में बड़े जनाधार का दावा करने वाली भाजपा की सहयोगी इन तीनों छोटे दलों की राजनीतिक जमीन इस चुनाव में खिसकती नजर आई है. 2019 लोकसभा चुनाव में पूर्वांचल की दो सीटों से जीत दर्ज करने वाले अपना दल (सोनेलाल) राबर्ट्सगंज की सीट हार गई है.

निषाद पार्टी के अध्यक्ष डा. संजय निषाद के पुत्र प्रवीण निषाद जो संतकबीरनगर से भाजपा के सांसद हैं वह भी इस बार चुनाव हार गए हैं. प्रवीण इस बार भी संतकबीरनगर से भाजपा के सिंबल पर चुनाव मैदान में थे, वह सपा प्रत्याशी से चुनाव हार गए हैं. इस चुनाव में डा. संजय निषाद लगातार भाजपा से अपने सिंबल पर कोई सीट मांग रहे थे जो नहीं मिली थी.

रालोद को भाजपा से दोस्ती का फिर लाभ

भाजपा से दोस्ती करके रालोद सौ फीसदी मुनाफे में रहा. भाजपा को ज्यादा लाभ नहीं मिला और जाट पट्टी में वह 2014 और 2019 नहीं दोहरा सकी. रालोद के खाते में दो सीटें बिजनौर और बागपत थीं. ये दोनों सीटें रालोद ने जीत ली हैं.

बागपत सीट पर पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के परिवार का दबदबा रहा है. बागपत सीट पर मंगलवार को हुई मतगणना में प्रारंभिक झटकों के बाद आखिरकार राजकुमार सांगवान ने बाजी मार ली. वहीं, बिजनौर की सीट पर रालोद ने विधायक चंदन सिंह चौहान पर दांव खेला. यहां सपा के दीपक सैनी से उनका कड़ा मुकाबला हुआ. बसपा के बिजेंद्र सिंह ने दो लाख से अधिक मत हासिल करके रालोद की जीत को सिमटा दिया. भाजपा से दोस्ती करके रालोद को तीन लाभ हुए. एक चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिला, दूसरा प्रदेश मंत्रिमंडल में स्थान मिला और तीसरा, अपने हिस्से की दोनों लोकसभा सीटें जीत लीं.

भारत आएगा सोना 100 टन सोना

> भारत भूमि पर भारतीय रिजर्व बैंक के खजाने में 100 टन से कुछ ज्यादा स्वर्ण का शामिल होना सुखद और गौरवान्वित करने वाली खबर है. यह सोना भारत का ही है और भारतीय रिजर्व बैंक इस सोने को स्वदेश लाकर अपने विभिन्न खजानों में सुरक्षित कर लेगा.

जब सोने के स्वदेश लाए जाने की सूचना है, तब साल 1991 की याद स्वाभाविक है, जब मजबूरी में देश को अपना सोना विदेश भेजना पड़ा था. तब कर्ज का जाल भारी हो गया था, लेकिन आज भारत की अर्थव्यवस्था बेहतर प्रदर्शन कर रही है और कर्ज चुकाना अब समस्या नहीं है. ऐसे में, इतने बड़े पैमाने पर विदेश से सोना लाने की प्रशंसा ही की जा सकती है. मार्च के अंत तक रिजर्वबैंक के पास 822.1 टन सोना था, जिसमें से 413.8 टन विदेश में था. वास्तव में, अपना सोना किसी अन्य देश में रखने को बहुत अच्छा नहीं माना जाता है. रिजर्व बैंक शायद संदेश देना चाहता है कि भारत अब शक्तिशाली है और वह अपने सोने की हिफाजत खुद कर सकता है.

भारत का ज्यादातर सोना बैंक ऑफ इंग्लैंड के पास सुरक्षित है और कुछ सोना विदेश में रखना रणनीतिक रूप से ठीक फैसला है. एक खास बात यह भी है कि भारत चालू वित्त वर्ष में ऐसे चंद देशों में शुमार है, जिन्होंने सोना खरीदा है.

भारतीय रिजर्व बैंक ने कुछ ही महीनों में 27.5 टन सोना खरीदकर अपने स्वर्ण भंडार में जमा किया है. विगत कुछ वर्षों में भारत ने अपनी सुधरती आर्थिक स्थिति और जरूरत के अनुरूप जो सोना खरीदा है, उसका ज्यादातर हिस्सा विदेश में ही रखा गया है.

आर्थिक विशेषज्ञ भी यह मानते हैं कि अनुपात से अधिक सोना विदेश में रखना कोई अच्छा फैसला नहीं है. ध्यान देने की बात है कि साल 1991 में जब भारत पर आर्थिक संकट आया था, तब विदेशी बैंक गिरवी रखे जा रहे भारतीय सोने को भारत में ही रहने दे सकते थे, पर तब शायद भारतीय अर्थव्यवस्था से दुनिया के ज्यादातर देशों को विश्वास कुछ डिग गया था. आज अर्थव्यवस्था के मोर्चे पर हम ब्रिटेन से आगे निकल गए हैं, तो हमें अपनी नीतियों में गरिमा के अनुरूप परिवर्तन करना ही चाहिए. वैसे, भारत की स्थिति अचानक नहीं सुधरी है. लगभग पंद्रह साल पहले भारत ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष से 200 टन सोना खरीदा था. संकेत साफ है, आर्थिक उदारीकरण की नीति अब रंग ला रही है.

सोने का भंडार किसी देश की आर्थिक स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है. जरूरत के समय सोना ही मजबूती देता है या संकट से उबारता है. पहले दुनिया की तमाम अर्थव्यवस्थाएं स्वर्ण मानक को मानती थीं, पर 1970 के दशक में ज्यादातर देशों ने आधिकारिक तौर पर स्वर्ण मानक को छोड़ दिया. फिर भी दुनिया के सभी ताकतवर देशों के पास भारी मात्रा में सोना है. स्वर्ण भंडार के मामले में भारत 822.1 टन के साथ दुनिया में नौवें स्थान पर है और अमेरिका के पास सर्वाधिक 8,133 टन से ज्यादा सोना है. जर्मनी के पास 3,352 टन सोना है. उसके बाद इटली, फ्रांस, रूस, चीन (2,262 टन), स्विट्जरलैंड और जापान का स्थान है. समय के साथ सोने का भाव बढ़ता ही रहा है, बीस साल पहले जो सोना 6,307 रुपये का था, वही सोना आज 73,390 रुपये का हो गया है. जाहिर है, सोने की मांग नहीं घटने वाली, पर ज्यादा से ज्यादा भारतीयों को अपनी बुद्धि और श्रम से सोना खरीदने में सक्षम होना पड़ेगा, तभी देश के स्वर्ण भंडार की खनक-चमक बढ़ेगी.

नई दिल्ली. लोकसभा चुनाव के नतीजों से भाजपा को बड़ा झटका लगा है. गठबंधन के सहारे उसने बहुमत तो हासिल कर लिया है, लेकिन जिस तरह से पार्टी ने चुनाव अभियान चलाया था और जो दावे किए थे उनसे वह बहुत दूर रह गई. यहां तक कि भाजपा को अपने दम पर बहुमत भी नहीं मिल सका, जो कि उसने 2014 व 2019 के आम चुनाव में हासिल किया था.

अपने ही गढ़ में कमजोर पड़ी भाजपा

जाहिर है जनता के बीच न तो मोदी की गारंटी अपना असर दिखा सकी और न ही विकास के बड़े काम और विभिन्न लाभार्थी योजनाएं. दूसरी तरफ, सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों को हवा देकर विपक्ष अपनी जड़ जमाने में सफल रहा है.

मोदी के इर्द-गिर्द सिमटा रहा भाजपा-राजग का चुनाव अभियानः

लगभग डेढ़ महीने लंबे चुनाव अभियान के बाद मंगलवार सुबह जब लोकसभा चुनाव के नतीजे आने शुरू हुए तो किसी को भी इस तरह के परिणामों की उम्मीद नहीं थी. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इर्द-गिर्द भाजपा और राजग का चुनाव अभियान सिमटा रहा. मोदी का खुद की जीत का अंतर कम हो गया और कई बड़े नेता चुनाव मैदान में हार गए. भाजपा को अपने ही सबसे मजबूत गढ़ में पिछड़ना पड़ गया. पार्टी की मुख्य विरोधी कांग्रेस को मिली अनअपेक्षित सफलता ने भाजपा को बहुमत से पीछे धकेल दिया. हालांकि कुछ राज्यों में उसने जबरदस्त प्रदर्शन किया और नए गठबंधनों के साथ उसे काफी सफलता भी मिली, लेकिन उसकी अपनी कमजोरी ही उसके बहुमत की राह में रोड़ा बन गई. मसलन, उत्तर प्रदेश में लगातार दो लोकसभा चुनाव में भारी जीत दर्ज करने वाली भाजपा इस बार विपक्षी इंडिया गठबंधन से पीछे गई.

बीते चुनाव में 62 सीटें जीतने वाली भाजपा को उत्तर प्रदेश में केवल 31 सीटें ही मिलीं. उसके कई प्रमुख नेता चुनाव हार गए और कई प्रमुख नेताओं का अंतर काफी घट गया.

प्रत्याशियों के चयन में भी कुछ गड़बड़ियां हुईं. जिन क्षेत्रों से मौजूदा सांसदों को लेकर नाराजगी थी व पार्टी के पास ऐसे सर्वे भी थे, बावजूद उनको टिकट देना पार्टी को भारी पड़ा. दूसरे दलों से आए उम्मीदवारों पर भरोसा करने से भी काडर में नाराजगी बढ़ी थी.

क्या आप भी लेने जा रहे हैं पर्सनल लोन, उससे पहले जानिए लीजिए नया अपडेट अपडेट ?

> Personal Loan Update: भारतीय रिजर्व बैंक ने देश में उपभोक्ता ऋण में वृद्धि से उत्पन्न होने वाले जोखिमों पर चिंता व्यक्त की है. भारतीय रिजर्व बैंक ने उपभोक्ता ऋण पर जोखिम भार बढ़ा दिया है. अब बैंकों और गैर-बैंकिंग संस्थानों के लिए इस सेगमेंट में लोन देना महंगा हो जाएगा.

बैंक जिस तरह लोगों को कर्ज बांटते हैं, उसी तरह उन्हें अधिक पूंजी का प्रावधान करना होगा. इससे टॉप रेटेड फाइनेंस कंपनियों की उधार लेने की लागत बढ़ जाएगी और वे महंगी ब्याज दरों पर लोगों को कर्ज देंगी. भारतीय रिजर्व बैंक के नए प्रावधान का असर होम, ऑटो या एजुकेशन लोन पर नहीं पड़ेगा.

हालांकि, लोन देने वाली बैंकिंग संस्थाओं या फाइनेंस कंपनियों को हर सेगमेंट में लेंडिंग रेट बढ़ाना पड़ सकता है. रिजर्व बैंक के सख्त नियमों के कारण अब उन्हें और अधिक नुकसान उठाना पड़ सकता है.

कुछ दिन पहले भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों को असुरक्षित पर्सनल लोन के मामले में बढ़ते खतरे को लेकर आगाह किया था.

एक दिन पहले रिजर्व बैंक ने कर्ज देने वाले बैंकों के लिए अधिक राशि का प्रावधान करना जरूरी कर दिया है.

भारतीय रिजर्व बैंक ने उपभोक्ता ऋण पर जोखिम भार एक-चौथाई बढ़ा दिया है. इसे 100 से बढ़ाकर 125 फीसदी कर दिया गया है. इसका मतलब है कि पहले बैंकों को हर ₹100 के लोन के लिए ₹9 की पूंजी रखनी पड़ती थी, अब उन्हें हर ₹100 के लोन के लिए ₹11.25 की अलग से पूंजी रखनी होगी.

भारत में बैंकिंग कारोबार के नियामक आरबीआई ने क्रेडिट कार्ड प्राप्तियों पर जोखिम भार भी बढ़ा दिया है. इसके साथ ही बैंकों द्वारा गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों को दिए जाने वाले कर्ज का जोखिम भार भी बढ़ा दिया गया है. अभी तक बैंकों द्वारा एनबीएफसी को दिए जाने वाले कर्ज पर जोखिम भार 100 फीसदी से कम होता था.

भारतीय रिजर्व बैंक के इस निर्देश से टॉप रेटेड फाइनेंस कंपनियों के लिए बैंक से कर्ज लेने की लागत बढ़ जाएगी. हालाँकि, यह प्रावधान आवास और एसएमई को ऋण देने जैसे प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों पर लागू नहीं होगा. इसके साथ ही यह प्रावधान होम लोन, ऑटो लोन या एजुकेशन लोन पर लागू नहीं होगा.

पिछले कुछ सालों से क्रेडिट कार्ड का बकाया तेजी से बढ़ रहा है. साल-दर-साल आधार पर, सितंबर 2023 के अंत तक क्रेडिट कार्ड का बकाया 30 प्रतिशत बढ़कर 2.17 लाख करोड़ रुपये हो गया है. सितंबर में साल-दर-साल आधार पर अन्य व्यक्तिगत ऋणों की राशि 25 प्रतिशत बढ़ गई है और 12.4 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया.

यूपी में जातियों का रुख भांपने में भाजपा विफल

लखनऊ. अबकी बार 400 पार का नारा देकर विपक्ष पर मनोवैज्ञानिक लाभ लेने की भारतीय जनता पार्टी की रणनीति यूपी में बुरी तरह विफल रही है. चुनाव प्रचार में जमीनी हकीकत की अनदेखी, युवाओं को रोजगार के मुद्दे पर मुखर न होना, पेपरलीक से लेकर स्थानीय स्तर पर बेरोजगारी की समस्या भाजपा के लिए बड़ी मुसीबत साबित हुई है. वहीं, सपा मुखिया अखिलेश यादव ने जमीनी स्तर पर दलित-ओबीसी जातियों का सटीक जातीय-गुणा गणित बिठाकर भाजपा को न केवल रणनीतिक मात दी बल्कि उनकी रणनीति सपा-कांग्रेस गठबंधन के लिए बड़ी संजीवनी साबित हुई.

युवाओं को लेकर मौन बनी मुसीबत

तमाम दीगर कारणों के अतिरिक्त भाजपा ने यूपी में 80 में 80 सीटें जीतने का बड़ा लक्ष्य तो रखा लेकिन चाहे पूर्वांचल हो या फिर पश्चिमी यूपी, भाजपा की रणनीति में तमाम रोड़े रहे. बड़े नेता बड़बोलेपन में फंसे रहे और जमीनी हकीकत को भांपने में राज्य का संगठन पूरी तरह नाकाम रहा. प्रचार के दौरान भाजपा मतदाताओं खासतौर पर युवाओं को बड़े पैमाने पर लुभाने में नाकाम रही. मसलन, अमेठी की गौरीगंज सीट पर ब्राह्मण समाज के युवाओं में इस बात को लेकर नाराजगी थी कि उन्हें स्थानीय स्तर पर नौकरी नहीं मिली और तमाम परीक्षाओं के पेपरलीक होने के कारण उनका भविष्य अधर में है. कहना गलत न होगा कि भाजपा के घोषणा पत्र में भी युवाओं को नौकरी देने के मुद्दे पर कोई प्रभावी वादा नहीं था. वहीं यूपी के चाहे पूर्वांचल हो या बुंदेलखंड, हर कहीं युवाओं में नौकरी को लेकर बेचैनी थी.

पूर्वांचल में जातीय समीकरण की अनदेखी

भाजपा ने पूर्वांचल में जमीनी जातीय समीकरण की अनदेखी की. राजभर समुदाय से लेकर निषादों व चौहानों में भाजपा सरकार और संगठन को लेकर पहले जैसा जोश नहीं था. इन जातियों के युवाओं में चर्चा आम थी कि हमें क्या मिला? ऐसा नहीं है भाजपा का संगठन इसे समझ नहीं रहा था लेकिन इसे जमीनी स्तर पर मैनेज करने के लिए की गई उसकी कोई भी रणनीति काम नहीं आई. चाहे घोसी में ओम प्रकाश राजभर के बेटे अरविंद राजभर हों या फिर संतकबीरनगर में निषाद पार्टी के प्रवीण निषाद, सभी के चुनाव में एक संदेश आम रहा कि भाजपा से उन्हें वह तवज्जो नहीं मिली जैसी मिलनी चाहिए थी. नतीजे बता रहे हैं कि ओबीसी राजनीति में भाजपा सपा से पिछड़ गई. भाजपा ने कम आबादी वाले राजभर, चौहान, निषाद पर फोकस किया, जबकि अपने साथ मजबूती से जुड़े रहे अधिक आबादी वाले कुर्मी और कुशवाहा जातियों को मजबूती से रोक नहीं पाई.

मझगांव डॉक ने की छप्परफाड़ कमाई, जानिए कितने प्रतिशत उछला शेयर ?

Mazagon Dock's Profit: सरकारी जहाज निर्माण कंपनी मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड का मुनाफा वित्त वर्ष 2024 की चौथी तिमाही (जनवरी-मार्च) में साल-दर-साल (YoY) आधार पर दोगुना होकर 663 करोड़ रुपये हो गया है. एक साल पहले इसी तिमाही में शुद्ध लाभ 326 करोड़ रुपये था.

वित्त वर्ष 2024 में कंपनी का मुनाफा 73.09% बढ़ा

पूरे वित्त वर्ष 2024 में मझगांव डॉक का मुनाफा 73.09% बढ़कर ₹1,936.97 करोड़ हो गया. वित्त वर्ष 2023 में मुनाफा ₹1,119.03 करोड़ था.

पूरे वित्त वर्ष 24 में रेवेन्यू 21% बढ़कर 9466.58 करोड़ हो गया

पूरे वित्त वर्ष 24 में मझगांव डॉक का रेवेन्यू यानी आय 21% बढ़कर 9466.58 करोड़ हो गया. वित्त वर्ष 23 में रेवेन्यू 7827.18 था. वहीं, चौथी तिमाही में रेवेन्यू 50% बढ़कर 3,103.6 करोड़ हो गया है. एक साल पहले इसी अवधि में रेवेन्यू ₹2,078.6 करोड़ था.

कंपनी ने वित्त वर्ष 2024 के लिए 12.11 रुपये प्रति शेयर का अंतिम लाभांश घोषित किया है. कंपनियां मुनाफे का एक हिस्सा अपने शेयरधारकों को देती हैं, इसे लाभांश कहते हैं. मझगांव डॉक ने अपने चौथी तिमाही और सालाना नतीजे जारी किए.

मझगांव डॉक ने पिछले एक साल में 321.88% रिटर्न दिया

मझगांव डॉक का शेयर आज 11.10% बढ़कर 3,374 रुपये पर बंद हुआ. पिछले एक साल में इसने 321.88% का रिटर्न दिया है. मझगांव डॉक के शेयर 12 अक्टूबर 2020 को बाजार में लिस्ट हुए थे. इसका इश्यू प्राइस 145 रुपये प्रति शेयर था. वहीं, इसकी लिस्टिंग 190 रुपये पर हुई थी.

आप-कांग्रेस गठबंधन भी सूपड़ा साफ होने से नहीं बचा सका

नई दिल्ली. दिल्ली के सियासी अखाड़े में भाजपा को मात देने के लिए धुर विरोधी आम आदमी पार्टी और कांग्रेस साथ आए, लेकिन फिर भी तीसरी बार अपना सूपड़ा साफ होने से नहीं रोक पाए. भाजपा ने सभी सात सीटों पर जीत हासिल करके लगातार तीसरी बार दिल्ली में अपना परचम लहराया. गठबंधन के बाद भी मिली इस करारी हार को लेकर राजनीतिक विश्लेषक कई कारण बता रहे हैं. इसमें गठबंधन का सही तरीके से जमीन पर नहीं उतरने के अलावा कांग्रेस व आम आदमी पार्टी के अंदरूनी विवाद भी बड़ा कारण बने.

समन्वय नहीं दिखा आप व कांग्रेस भले ही मिलकर लड़ रहे थे, लेकिन चुनाव प्रचार से लेकर मतदान वाले दिन तक दोनों के कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय नहीं दिखाई दिया. मतदान वाले दिन अधिकतर केंद्र पर बूथ कमेटियों के लोग दिखाई नहीं दिए. जहां कांग्रेस के उम्मीदवार थे, वहां आप कार्यकर्ता नहीं दिखे. जहां आप के उम्मीदवार थे, वहां कांग्रेस वाले नदारद रहे.

शीर्ष नेतृत्व में भी तालमेल नहीं राजनीतिक जानकारों की मानें तो कार्यकर्ता ही नहीं, बल्कि शीर्ष नेताओं में भी समवन्य नहीं दिखा. राहुल गांधी ने दिल्ली में दो रैली की, लेकिन एक में भी आम आदमी पार्टी के नेताओं को न्योता नहीं दिया. जबकि मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल उस समय चुनाव प्रचार के लिए अंतरिम जमानत पर बाहर थे. यही नहीं, समन्वय के लिए जो समितियां बनीं, वे भी महज खानापूर्ति तक ही सीमित रहीं.

विवादों ने बिगाड़ा गणित चुनाव के दौरान दोनों दलों को अपने-अपने विवादों के चलते भी नुकसान उठाना पड़ा. कांग्रेस में गठबंधन की घोषणा के बाद टिकट बंटवारे को लेकर झगड़ा हुआ. कांग्रेस के प्रदेशध्यक्ष समेत कई बड़े नेताओं ने कांग्रेस से इस्तीफा देकर बीच में भाजपा का दामन थाम लिया. इससे लोगों में गलत संदेश गया कि कांग्रेस पर भरोसा नहीं किया जा सकता. यह मामला शांत होता कि उसके बाद स्वाति मालीवाल के साथ मारपीट का मामला सामने आ गया. इंडिया गठबंधन एक भी महिला उम्मीदवार को टिकट नहीं देकर विपक्ष के निशाने पर था, वहीं एक महिला सांसद के मारपीट के मामले ने उन्हें नुकसान किया.

भाजपा की जीत के ये हैं मुख्य कारण

- संगठन से जुड़े स्थानीय नेताओं को दिया टिकट
- दिल्ली में अलग अलग राज्यों के नेताओं को प्रचार में लगाया
- 131 रोड शो और बड़ी जनसभाएं और 2625 नुक्कड सभाएं की
- दिल्ली के लोगों से जुड़ने के लिए 10,048 पदयात्राएं की
- पार्टी ने कार्यक्रमों को प्रदेश कार्यालय पर आनलाइन अपडेट कर मानीटरिंग की
- जमीन पर आप और कांग्रेस कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय नहीं दिखा. चुनाव प्रचार से लेकर मतदान वाले दिन तक मतदान केंद्र पर यह साफ दिखाई दिया.
- नेताओं में तालमेल नहीं रहा. केजरीवाल ने कांग्रेस उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया, लेकिन राहुल की रैली में उन्हें नहीं बुलाया गया.
- कांग्रेस में टिकट बंटवारे को लेकर उपजा विवाद. उसके बाद कांग्रेस प्रदेशध्यक्ष समेत उनके चार से अधिक पूर्व विधायकों का इस्तीफे के चलते नाराजगी रही.
- आम आदमी पार्टी के जमीनी कार्यकर्ताओं में कांग्रेस के साथ गठबंधन को लेकर नाराजगी दिखी.

सपने में नजर आए कुत्ता तो जानिए क्या है इसका मतलब, देता है शुभ अशुभ संकेत

रात में सोने के बाद अक्सर लोग सपनों की दुनिया में खो जाते हैं. इस दौरान उन्हें कई बार अच्छे सपने नजर आते हैं, तो कई बार बुरे सपने भी दिखाई देते हैं. कुछ डरावने होते हैं, तो कुछ अजीबोगरीब होते हैं. इसका आपके वास्तविक जीवन से भी कोई संबंध नहीं होता, लेकिन स्वप्न शास्त्र में हर एक सपने का अलग-अलग महत्व बताया गया है. तो चलिए आज हम आपको बताते हैं कि सपने में कुत्ते के देखने का क्या मतलब होता है.जैसा कि हम सभी जानते हैं कुत्ता एक वफादार जानवर होता है जो अपने मालिक के प्रति पूरी तरह से समर्पित होता है. यह इंसान के हाव-भाव को समझ लेता है और उसी तरह अपनी प्रतिक्रिया अलग-अलग जगह पर देता है.

1. स्वप्न शास्त्र के अनुसार, अगर सपने में कुत्ता कहीं से चलकर आपके पास आ रहा है तो समझ लीजिए की बहुत ही जल्द आपके किसी पुराने मित्र से मुलाकात होने वाली है. साथ ही जीवन में अकेलेपन को दूर करने वाला संकेत माना जाता है.
2. स्वप्न शास्त्र के अनुसार, अगर कुत्ते का झुंड आपको नजर आता है तो इसका अर्थ है कि परिवार में सब कुछ सही होने वाला है. आर्थिक तंगी से छुटकारा मिल जाएगा. फैमिली के साथ ज्यादा टाइम स्पेंड कर पाएंगे.
3. अगर आपको सपने में भूरे रंग का कुत्ता दिखता है तो यह आपके लिए फायदेमंद है.सपने में भूरे रंग का कुत्ता देखना एक शुभ संकेत है.भूरे रंग का कुत्ता सपने में देखने का मतलब होता है कि आपके रिश्ते में काफी मजबूती आएगी और अगर आपकी किसी से दोस्ती है तो उस दोस्ती में विश्वास बढ़ेगा.
4. अगर सपने में कुत्ता गुस्से में नजर आए तो इसे बुरा संकेत माना जाता है.स्वप्न शास्त्र के अनुसार इस सपने का मतलब है कि आपका कोई भरोसेमंद साथी आपको धोखा देने वाला है. इसलिए सावधान हो जाइए.
5. सपने में यदि कुत्ता काटता हुआ दिखाई तो यह एक शुभ संकेत है.इसका मतलब है कि आपको जल्द ही कोई शुभ समाचार मिलने वाला है.अगर आप किसी परेशानी में फंसे हुए हैं तो जल्द ही इससे छुटकारा मिलने वाला है.
6. अगर आपको सपने में रोता हुआ कुत्ता नजर आए तो आप सावधान हो जाइए क्योंकि यह संकेत है कि आपको कोई बुरा समाचार मिलने वाला है.ऐसा सपना देखना अशुभ माना जाता है.

भ्रष्टाचार को उखाड़ फेंकेंगे: पीएम

नई दिल्ली . लोकसभा चुनाव में एनडीए को मिले स्पष्ट बहुमत के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने अगले कार्यकाल की प्राथमिकताओं को स्पष्ट करते हुए कहा कि उनका तीसरा कार्यकाल देश में बड़े फैसलों का एक नया अध्याय लिखेगा. प्रधानमंत्री ने साफ किया कि हमारे पास रुकने और थमने का समय नहीं है. विकसित भारत के लिए निरंतर बड़े और उत्तम फैसले लेने होंगे.

प्रधानमंत्री ने कहा कि यह मोदी की गारंटी है और इस देश से गरीबों को पूरी तरह हटाने तक वह नहीं रुकेंगे. उन्होंने भ्रष्टाचार को भी जड़ से खत्म करने की बात कही. भाजपा मुख्यालय में मंगलवार देर शाम भाजपा कार्यकर्ताओं की भारी भीड़ के बीच मोदी ने केंद्र में एनडीए को लगातार तीसरी बार मिली जीत के लिए देश के मतदाताओं का आभार जताया. भाजपा के बड़े दावे और लक्ष्य से कम सीटें मिलने के बावजूद भाजपा कार्यकर्ताओं का उत्साह कम नहीं दिखा और पीएम मोदी ने भी उन में जोश भरने का काम किया. प्रधानमंत्री ने ओडिशा में पहली बार बनने जा रही भाजपा सरकार और आंध्र प्रदेश में एनडीए की तेलुगु देशम के नेतृत्व में बनने वाली सरकार का भी उल्लेख किया. वह बोले, राज्यों की विधानसभाओं में एनडीए को बड़ी विजय मिली है. अरुणाचल प्रदेश, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और सिक्किम सभी में एनडीए ने भारी सफलता हासिल की है और कांग्रेस का सूपड़ा तक साफ हो गया है.

मोदी ने चुनाव में एनडीए को मिली सफलता का विशेष उल्लेख किया और कहा कि तेलंगाना में हम दोगुना हुए हैं. केरल में खाता खुला है, मध्य प्रदेश, गुजरात, छत्तीसगढ़, दिल्ली, उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में लगभग क्लीन स्वीप किया है. छह दशक बाद देश के मतदाताओं ने नया इतिहास रचा है और एनडीए को लगातार तीसरी बार देश की सेवा करने का अवसर दिया है. इस मौके पर पार्टी अध्यक्ष जे पी नड्डा, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और गृहमंत्री अमित शाह भी मौजूद रहे.

भाषण की शुरुआत ही जय जगन्नाथ से की मोदी ने आंध्र प्रदेश की तेलुगु देशम पार्टी (टीडीपी) नेता चंद्रबाबू नायडू और जदयू के अध्यक्ष नीतीश कुमार के नेतृत्व में मिले शानदार प्रदर्शन के लिए उनका भी खास जिक्र किया. मोदी के भाषण में भाजपा के बड़े लक्ष्य को हासिल न करने को लेकर मायूसी नहीं दिखाई दी, बल्कि कम सीटें आने के बावजूद अपने आगे के बड़े लक्ष्य की मजबूती साफ दिखाई दी. उन्होंने अपने भाषण की शुरुआत ही जय जगन्नाथ से की, क्योंकि ओडिशा में पहली बार भाजपा की सरकार बनने जा रही है. पीएम ने अपने 10 साल के कार्यकाल की विभिन्न योजनाओं का भी जिक्र किया और तीसरी बार एनडीए को मिली जीत के लिए देश की जनता के सामने अपना मस्तक भी झुकाया.

गरीबी को देश के अतीत का हिस्सा बनाकर रहेंगे पीएम मोदी ने दो टूक कहा कि वह न रुकने वाले हैं, न थमने वाले हैं. उनका तीसरा कार्यकाल देश के बड़े फैसलों का नया अध्याय लिखेगा. उन्होंने इसे मोदी की गारंटी बताते हुए कहा कि हर क्षेत्र, हर वर्ग के विकास को एनडीए ने हमेशा प्राथमिकता दी है और अगले कार्यकाल में वह गरीबी को देश के अतीत का हिस्सा बनाकर रहेंगे.

सभी राज्यों के साथ मिलकर काम होगा मोदी ने वादा किया कि तीसरे कार्यकाल में हर तरह के भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ फेंकने का काम होगा. उन्होंने इसी साल संविधान के 75 साल पूरे होने का उल्लेख करते हुए कहा, वह सभी राज्यों के साथ मिलकर काम करेंगे, भले ही वहां किसी भी दल की सरकार हो.

नड्डा ने सहयोगी दलों की सराहना की

भाजपा अध्यक्ष जे पी नड्डा ने मोदी के नेतृत्व की प्रशंसा की और पार्टी के सहयोगी दलों के काम की भी सराहना की. उन्होंने कहा कि देश की जनता ने मोदी के नेतृत्व वाली मजबूत सरकार में एक बार फिर अपना विश्वास जताया है. वहीं, केंद्रीय मंत्री अनुराग सिंह ठाकुर ने पांचवीं बार हमीरपुर लोकसभा से जीत हासिल करने के बाद मंगलवार को कहा कि देश में तीसरी बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राजग की सरकार बन रही है. हिमाचल ने भी तीसरी बार जीत का चौका लगाया है. ठाकुर ने कहा कि उन्हें गर्व है कि नरेंद्र मोदी को फिर से प्रधानमंत्री बनाने के लिए पूरे देश के साथ देवभूमि हिमाचल व मेरा हमीरपुर संसदीय क्षेत्र अपनी संपूर्ण भागीदारी निभा रहा है. उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश विकास और उन्नति के नए आयाम छुएगा.

जीत जनता का आर्शीवाद : शाह

गृहमंत्री अमित शाह ने मंगलवार को कहा कि लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) की जीत पीएम नरेंद्र मोदी को जनता का आशीर्वाद है. उन्होंने कहा कि पिछले 10 साल में मोदी सरकार ने गरीबों, महिलाओं, पिछड़ों और युवाओं के सपनों को साकार करने के लिए कड़ी मेहनत की.

शाह ने कहा कि यह मोदी के पिछले 23 वर्षों के सार्वजनिक जीवन के मैराथन प्रयास की जीत है, जिसमें उन्होंने एक भी दिन छुट्टी नहीं ली. खुद की परवाह नहीं की और केवल देश और देशवासियों के कल्याण के लिए दिन-रात काम किया. लगातार तीसरी जीत से यह स्पष्ट है कि जनता का भरोसा केवल मोदी पर है. उन्होंने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा, मोदी के नेतृत्व में एनडीए को लगातार तीसरी बार सेवा का मौका देने के लिए देश की जनता को नमन करता हूं. इस जीत के लिए भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा और देश के हर भू-भाग में मेहनत करने वाले सभी भाजपा कार्यकर्ताओं को मैं बधाई देता हूं.

शाह ने लोकसभा और विधानसभा चुनावों में एनडीए गठबंधन को आशीर्वाद देने के लिए आंध्र प्रदेश की जनता को धन्यवाद दिया. उन्होंने कहा, मोदी के नेतृत्व में एनडीए आंध्र प्रदेश के लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने और राज्य को प्रगति और विकास के एक नए युग की ओर ले जाने के लिए प्रतिबद्ध है. हम सब मिलकर राज्य के नए भाग्य को आकार देंगे.

नतीजे मोदी के प्रति लोगों का भरोसा राजनाथ

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को कहा कि लोकसभा चुनाव में एनडीए की जीत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत के दृष्टिकोण के प्रति लोगों के भरोसे को बताता है. उन्होंने कहा कि एनडीए की जीत मोदी की नीतियों और गरीबों के कल्याण के प्रति उनके समर्पण की जीत है. भारत की जनता ने उनके नेतृत्व में अपना विश्वास व्यक्त किया है. सिंह ने कहा, मोदी तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने जा रहे हैं और उनके नेतृत्व में हम विकसित भारत के सपने को साकार करने के लिए नई ऊर्जा और उत्साह के साथ काम करेंगे. वरिष्ठ भाजपा नेता ने कहा कि पिछले 10 वर्षों में भारत उस स्थिति में पहुंच गया है, जहां न केवल इसके नागरिकों को, बल्कि सभी देशों को यह विश्वास है कि भारत और अधिक विकसित होने के साथ विश्व को नेतृत्व और नई दिशा प्रदान करने की क्षमता रखता है.

डिजिटल बैंकिंग और बिल पेमेंट जैसी मिलेंगी सुविधाएं, लोन लेने की भी मिलेगी सुविधा

> Reliance Jio Finance App: जियो फाइनेंशियल सर्विसेज लिमिटेड ने अपने जियो फाइनेंस ऐप का बीटा वर्जन लॉन्च कर दिया है. ऐप पर यूजर्स को डिजिटल बैंकिंग, यूपीआई ट्रांजेक्शन, बिल पेमेंट और इंश्योरेंस एडवाइजरी जैसी सेवाएं मिलेंगी. इसके अलावा म्यूचुअल फंड पर लोन लेने की सुविधा भी मिलेगी.

आने वाले समय में कंपनी अपनी लोन सेवाओं का विस्तार करते हुए होम लोन तक ले जाएगी. कंपनी इसे अत्याधुनिक प्लेटफॉर्म बता रही है जो डेली फाइनेंस और डिजिटल बैंकिंग में क्रांति लाएगा. कंपनी यूजर इनपुट के आधार पर ऐप में सुधार करेगी.

जियो फाइनेंस ऐप पर चार तरह की सेवाएं मिलेंगी

इंश्योरेंस ब्रोकिंग: यह कार इंश्योरेंस, बाइक इंश्योरेंस, हेल्थ इंश्योरेंस और लाइफ इंश्योरेंस की सेवाएं देगी. कंपनी ने इन सेवाओं के लिए आईसीआईसीआई लोम्बार्ड, स्टार हेल्थ, डिजिट, एचडीएफसी एर्गो जैसी इंश्योरेंस कंपनियों के साथ साझेदारी की है.

डिजिटल बैंकिंग: इसमें आपको बिना किसी कागजी कार्रवाई के जियो पेमेंट बैंक में बचत खाता खोलने की सेवा मिलेगी. सिर्फ आधार कार्ड और पैन कार्ड से जीरो बैलेंस अकाउंट खोला जा सकेगा. रिलायंस स्मार्ट प्वाइंट पर कैश निकासी की सुविधा मिलेगी.

UPI पेमेंट: पेटीएम, फोनपे, गूगल पे की तरह UPI पेमेंट किया जा सकेगा. कारोबारियों को पेमेंट गेटवे की सुविधा मिलेगी. इस सेवा के जरिए मर्चेंट कार्ड, UPI, नेटबैंकिंग, वॉलेट जैसे डिजिटल मोड से पेमेंट स्वीकार किया जा सकेगा.

लोन सर्विस: इसकी शुरुआत म्यूचुअल फंड पर लोन से हो रही है. यूजर को 9.9% की ब्याज दर पर 10 मिनट के अंदर लोन मिल जाएगा. यह प्रक्रिया पूरी तरह डिजिटल है और प्रीपेमेंट के लिए कोई चार्ज नहीं है. आने वाले समय में होम लोन भी मिलेगा.

उत्तर प्रदेश में खोया जनाधार तलाश रही कांग्रेस को मिली संजीवनी

> लखनऊ. 'इंडिया' गठबंधन में सपा को साथ लेकर यूपी के रण में उतरी कांग्रेस को अप्रत्याशित सफलता मिली है. कांग्रेस ने अपने कोटे की 17 में से छह सीटों पर जीत का परचम लहराया. उसकी यह विजय लगभग 35 फीसदी स्ट्राइक रेट दर्शाती है. माना जा रहा है कि कांग्रेस के न्याय पत्र में शामिल घोषणाओं ने असर दिखाया. इसका लाभ उसके सहयोगी दल सपा को भी मिला. कांग्रेस ने चुनाव में रोजगार को बड़ा मुद्दा बनाया था और गरीब महिलाओं को सालाना एक लाख रुपये देने का वायदा किया था.

कांग्रेस को अमेठी, रायबरेली, बाराबंकी, सीतापुर, सहारनपुर व इलाहाबाद लोकसभा सीट पर सफलता मिली है. गठबंधन और सीटों के बंटवारे की घोषणा में देरी होने से प्रत्याशियों का चयन भी देर से हो पाने के बाद भी कांग्रेस को यह सफलता मिली. इस चुनाव परिणाम से कांग्रेस को यूपी में संजीवनी मिल गई है.

रायबरेली से खुद राहुल गांधी भारी मतों से चुनाव जीतने में सफल रहे तो लंबे समय तक सोनिया गांधी के प्रतिनिधि रहे किशोरी लाल शर्मा ने अमेठी में केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी को मात दे दी. अमेठी व रायबरेली में गांधी परिवार की सक्रियता का असर यह रहा कि आसपास की दो सीटों बाराबंकी व सीतापुर पर भी कांग्रेस का परचम लहरा गया. बाराबंकी सुरक्षित से कांग्रेस के तनुज पुनिया और सीतापुर से राकेश राठौर सांसद चुने गए. सहारनपुर से इमरान मसूद और इलाहाबाद से कुंवर उज्जवल रमण सिंह सांसद चुने गए. इमरान मसूद और कुंवर उज्जवल रमण सिंह सपा छोड़कर कांग्रेस में आए थे. कांग्रेस के प्रत्याशियों ने बांसगांव, महाराजगंज, अमरोहा, फतेहपुर सीकरी सीट पर भी अच्छा प्रदर्शन किया.

दो चुनावों में मायूसी मिली

दो चुनावों में भारी असफलता से कांग्रेस खेमे में खासी मायूसी थी. पार्टी को 2019 में एक और 2014 में दो सीटें ही मिल पाई थी. 2019 में उसके तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी को भी अमेठी में हार का सामना करना पड़ा था. रायबरेली में सोनिया गांधी अपनी सीट बचाने में सफल हो पाई थीं.

Reliance का नया प्लान, अब चुटकियों में घर पहुंचाएगी राशन, बिगबास्केट, ब्लिंकिट, जेप्टो के छूटे पसीने!

Quick Commerce स्पेस तेजी से पॉपुलर हो रहा है. इस मार्केट में कई ब्रांड्स पहले से मौजूद हैं. फिलहाल इस कैटेगरी में Blinkit, BigBasket, Instamart और Zepto जैसे ब्रांड हैं. ये कंपनियां अभी बड़े शहरों में ही अपनी सर्विस ऑफर करती है. वहीं मुकेश अंबानी की रिलायंस इंडस्ट्रीज ने भी क्विक मार्केट में एंट्री की तैयारी कर ली है. रिपोर्ट्स की मानें तो Reliance Jio Mart जल्द ही इस मार्केट में रि-एंट्री कर सकता है. हालांकि, कंपनी शुरुआत में 7 से 8 शहरों में ही फोकस करेगी, जिसे धीरे-धीरे बढ़ाकर 1000 शहरों तक पहुंचाया जाएगा. कंपनी दिल्ली-NCR, मुंबई, बेंगलुरु, चेन्नई, पुणे, हैदराबाद और कोलकाता में इस सर्विस को जल्द शुरू कर सकती है.

कौन से मॉडल को फॉलो करती हैं दूसरी कंपनियां?

JioMart की भावी प्रतिद्वंद्वी जैसे Blinkit, BigBasket, Instamart और Zepto डार्क स्टोर मॉडल को फॉलो करते हैं. हालांकि, JioMart रिलायंस रिटेल के व्यापक नेटवर्क का फायदा उठाकर 18,000 से अधिक स्टोर्स और फुलफिल्मेंट सेंटर्स से ऑर्डर पूरा करेगा. रिलायंस का यह नया प्लान ऐसे समय में आ रहा है जब वॉलमार्ट का फ्लिपकार्ट भी क्विकि कॉमर्स स्पेस में एंट्री करने की तैयारी कर रहा है. क्विकि कॉमर्स सर्विस ने मिलेनियल्स और जेन जेड के बीच तेजी से लोकप्रियता हासिल की है.

अब 30 मिनट में घर आएगा राशन

ईटी की एक खबर के मुताबिक अब जियोमार्ट सिर्फ 30 मिनट के अंदर अपने ग्राहकों राशन और अन्य सामान की डिलीवरी करने की प्लानिंग कर रहा है. अभी ब्लिंकइट, स्विगी और जेप्टो जैसी कंपनियां 10 से 15 मिनट में सामान की डिलीवरी करती हैं. जबकि टाटा ग्रुप की बिग बास्केट नाउ 30 मिनट के अंदर राशन एवं अन्य सामान की होम डिलीवरी करती हैं.

रिलायंस इंडस्ट्रीज इसके लिए अपने जियोमार्ट के नेटवर्क के साथ-साथ रिलायंस रिटेल के स्मार्ट बाजार जैसे नेटवर्क का भी इस्तेमाल करेगी. अभी जियोमार्ट अपने कस्टमर्स को अगले दिन की शेड्यूल डिलीवरी का ऑप्शन देती है.

लोकसभा में 280 पहली बार कई अभिनेता व पूर्व सीएम भी

नई दिल्ली. 18वीं लोकसभा के चुनाव की इसे एक अहम उपलब्धि माना जा सकता है कि 543 सीटों में से 280 सदस्य पहली बार संसद के निचले सदन में कदम रखेंगे. इनमें से कई पहले से राजनीति में हैं जो राज्यसभा सदस्य या विधायक या पूर्व मुख्यमंत्री तक रह चुके हैं, तो कई की राह परिवारवाद ने तय की है. कुछ खिलाड़ी तो कुछ अभिनेता भी इस फेहरिस्त में शामिल हैं.

यूपी की 80 सीटों में से 45 सीटों पर चुने गए उम्मीदवारों के लिए संसद में यह पहला कार्यकाल होगा. इनमें मेरठ से अभिनेता अरुण गोविल (भाजपा) हैं, तो अमेठी से किशोरी लाल शर्मा, जिन्होंने भाजपा की स्मृति ईरानी को हराया. नगीना से दलितों के अधिकारों के लिए सक्रिय आजाद समाज पार्टी के चंद्रशेखर आजाद उर्फ रावण भी जीते. महाराष्ट्र की 48 सीटों में से 33 पर भी पहली बार सांसद बनने वाले सदस्यों की जीत हुई है. इनमें से एक हैं दिन्डोरी (एसटी सीट) से स्कूल अध्यापक भास्कर भगरे जिन्हें एनसीपी (शरद पवार) ने टिकट दिया. भगरे ने निवर्तमान भाजपा सांसद भारती पवार को हराया. मुंबई उत्तर से भाजपा के पीयूष गोयल, अमरावती से कांग्रेस के बलवंत वानखेड़े जिन्होंने भाजपा की निवर्तमान सांसद नवनीत राणा को हराया, अकोला से पूर्व केंद्रीय मंत्री संजय धोत्रे के बेटे भाजपा प्रत्याशी अनूप धोत्रे, सांगली से निर्दलीय उम्मीदवार विशाल पाटिल और रत्नागिरी-सिंधुदुर्ग से पूर्व सीएम नारायण राणे पहली बार लोकसभा सदस्य चुने गए हैं. हरिद्वार से त्रिवेंद्र सिंह रावत, करनाल से मनोहर लाल, त्रिपुरा पश्चिम से बिप्लब कुमार देब, गया से जीतन राम मांझी, कर्नाटक में हावेरी से बसवराज बोम्मई और बेलगाम से जगदीश शेट्टार, जालंधर से पूर्व मुख्यमंत्री चरणजीत सिंह चन्नी, त्रिशूर से अभिनेता सुरेश गोपी, मंडी (हिमाचल प्रदेश) से अभिनेत्री कंगना रनौत का भी लोकसभा का यह पहला कार्यकाल होगा. शिवसेना (यूबीटी) के राज्यसभा सदस्य अनिल देसाई, भूपेंद्र यादव, धर्मेंद्र प्रधान, मनसुख मांडविया और परषोत्तम रूपाला और पूर्व राजघरानों में कोल्हापुर से छत्रपति शाहू, मैसूर से यदुवीर कृष्णदत्त चामराजा वाडियार और त्रिपुरा पूर्व से कृति देवी देबबर्मन भी पहली बार लोकसभा में पहुंचेंगे.

पश्चिम बंगाल की तमलुक सीट से कलकत्ता हाई कोर्ट के पूर्व जज अभिजीत गंगोपाध्याय भी पहली बार सांसद बनने वालों में शामिल हैं.

सांसद 'अंडर-30'

2019 के लोकसभा चुनाव की तरह इस बार भी 30 वर्ष से कम आयु के चार उम्मीदवार निर्वाचित हुए हैं. बिहार के समस्तीपुर से लोकजनशक्ति पार्टी की 25 वर्षीय शांभवी चौधरी, राजस्थान के भरतपुर से कांग्रेस की 25 वर्षीय संजना जाटव, उत्तर प्रदेश के पूर्व मंत्री इंदरजीत सरोज के बेटे व सपा प्रत्याशी पुष्पेंद्र सरोज और यूपी की मछलीशहर सीट पर सुप्रीम कोर्ट अधिवक्ता व सपा प्रत्याशी 25 वर्षीय प्रिया सरोज की लोकसभा में यह पहली पारी होगी.

दक्षिणी सूबों में इंडिया ब्लॉक ने अपना दमखम दिखाया

‘दक्षिण की कहानी इस बार भी भाजपा के लिए कुछ निराशाजनक रही है. जिस पार्टी ने 2019 में अभूतपूर्व रूप से अच्छा प्रदर्शन किया था और उत्तर के कुछ राज्यों में लगभग शत-प्रतिशत और अन्य में संतोषजनक सीटें जीतने के बाद उसकी उम्मीदें दक्षिणी राज्यों पर टिकी थीं. उम्मीदें पूरी नहीं हुईं, क्योंकि कुल मिलाकर 2019 के चुनावों की तुलना में भाजपा को दक्षिण में सीटों का नुकसान हुआ है, लेकिन उसे इस बात से सांत्वना मिल सकती है कि वह वोट शेयर बढ़ाने और केरल में भी प्रवेश करने में कामयाब रही है.’

‘भगवान के अपने देश’ में राज्य के प्रमुख मंदिर वाले शहर त्रिशूर में भगवा झंडा फहरा चुका है. अभिनेता से नेता बने सुरेश गोपी कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री के करुणाकरण के बेटे और कांग्रेस उम्मीदवार मुरलीधरन को हराने में कामयाब रहे. भाजपा की सफलता का एक अन्य कारण उच्च जातियों के प्रभुत्व वाले निर्वाचन क्षेत्र की संरचना और पार्टी के लिए ईसाई समर्थन है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राज्य के कई दौरे किए थे, यहां तक कि सुरेश गोपी की बेटी के विवाह समारोह में भी वह दिखाई दिए. भाजपा विशेष रूप से केरल से आकर्षित रही है, क्योंकि यह वामपंथ का गढ़ रहा है और राज्य की राजनीति वामपंथियों और कांग्रेस के नेतृत्व वाले यूडीएफ के बीच बंटी हुई है. केरल की अद्वितीय जनसांख्यिकी के साथ, जहां अल्पसंख्यक (मुस्लिम और ईसाई) आबादी का 48 प्रतिशत हैं. इसलिए यह नतीजा भाजपा के लिए संतोषप्रद रहा होगा.

जहां तक सीटों का सवाल है, पड़ोसी राज्य तमिलनाडु में भाजपा को कोई सीट नहीं मिली है. उसके सभी उम्मीदवारों, जिनमें राज्य पार्टी प्रमुख के अन्नामलाई, केंद्रीय मंत्री एल मुरुगन, पूर्व राज्यपाल तमीजसाई सुंदरराजन और पोन राधा कृष्णन शामिल थे, को हार का मुंह देखना पड़ा. तमिलनाडु की राजनीति में उथल-पुथल का एक और दौर आ सकता है, क्योंकि अन्नाद्रमुक को एक भी सीट नहीं मिली है. पार्टी के अन्य सभी पूर्व क्षत्रप टीटीवी दिनाकरन, ओ पनीरसेल्वम हार गए. चुनावों में डीएमके और उसके सभी सहयोगियों ने जीत हासिल की. हालांकि, सत्तारूढ़ द्रमुक के खिलाफ एक निश्चित सत्ता-विरोधी लहर रही थी, लेकिन अन्नामलाई द्वारा अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन करने में विफलता के कारण हुए वोटों के विभाजन से यह खत्म हो गई. भाजपा को खुद को फिर से संगठित करना होगा, क्योंकि राज्य में 2026 में विधानसभा चुनाव होने हैं.

कर्नाटक में हाल के विधानसभा चुनावों में बाजी पलटने वाली कांग्रेस पार्टी ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया, उसने नौ सीटों पर जीत दर्ज की है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के करिश्मे के दम पर भाजपा ने यहां 17 सीटें जीतीं. जद (एस) के साथ अंतिम समय में गठबंधन से पार्टी को दक्षिणी हिस्सों में मदद मिली.

पड़ोसी तेलुगु राज्यों आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में परिणाम काफी भिन्न रहे हैं. कांग्रेस के मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी के नेतृत्व वाले तेलंगाना में पार्टी आठ सीटें (2019 की तुलना में पांच अतिरिक्त) हासिल करने में कामयाब रही. भाजपा ने आठ सीटें जीतीं और एक पर एआईएमआईएम को जीत मिली. चंद्रशेखर राव के बीआरएस को कोई सीट नहीं मिल सकी.

आंध्र प्रदेश में, जहां विधानसभा चुनाव भी हुए थे, चंद्रबाबू नायडू की टीडीपी ने विधानसभा और लोकसभा, दोनों में जीत हासिल की और वाईएसआर कांग्रेस पार्टी के जगन मोहन रेड्डी को हार का सामना करना पड़ा. जगन को गंभीर सत्ता विरोधी लहर का सामना करना पड़ा. नायडू एक बार फिर शक्तिशाली क्षेत्रीय नेता के रूप में उभरे हैं, जो न केवल राज्य की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे, बल्कि राष्ट्रीय राजनीति में भी एक कारक होंगे, क्योंकि भाजपा सरकार उन पर निर्भर होगी. कुल मिलाकर, भाजपा को सही मायनों में राष्ट्रीय पार्टी बनने के लिए उत्तर भारतीय पार्टी का तमगा तोड़कर सभी क्षेत्रों में जीत हासिल करनी होगी. उत्तर के नेताओं की स्थानीय भाषाएं बोलने में असमर्थता निश्चित रूप से निराशाजनक है.

बिलासपुर सांसद तोखन साहू ने ली केंद्रीय राज्यमंत्री की शपथ

नई दिल्ली. बिलासपुर लोकसभा सांसद तोखन साहू ने मोदी मंत्रिमंडल में केंद्रीय राज्यमंत्री के रूप में शपथ ली. उन्हें राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई. बिलासपुर सांसद तोखन साहू मोदी मंत्रिमंडल के तीसरे कार्यकाल में राज्यमंत्री के रूप में शामिल किए गए हैं और छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व करेंगे.

बता दें कि तोखन साहू ने हाल ही में संपन्न हुए लोकसभा चुनाव में बिलासपुर क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी देवेंद्र यादव को 1 लाख 64 हजार 558 वोटों के बड़े अंतर से हराया है. तोखन साहू को 7 लाख 24 हजार 937 मिले, वहीं देवेंद्र यादव को 5 लाख 60 हजार 379 वोट मिले. तोखन साहू का जन्म मुंगेली जिला के ग्राम डिंडौरी में 15 अक्टूबर 1969 को हुआ था. उन्होंने एम. कॉम तक की शिक्षा ग्रहण की है. उनका विवाह लीलावती साहू से हुआ है, जिनसे एक पुत्र व एक पुत्री है. 1994 में लोरमी ब्लॉक के सुरजपुरा गांव के निर्विरोध पंच चुने जाने के साथ उनका राजनैतिक जीवन शुरू हुआ. 30 जनवरी 2005 को लोरमी क्षेत्र क्रमांक-18 फुलवारीकला से जनपद सदस्य बने.

2012 में जिला सहकारी बैंक बिलासपुर के प्रतिनिधि बनें. जिला साहू समाज के संरक्षक बने. भाजपा पश्चिम मंडल के महामंत्री बने. 2013 में भाजपा ने उन्हें लोरमी विधानसभा से टिकट देकर प्रत्याशी बनाया. उन्होंने कांग्रेस के प्रत्याशी और सिटिंग विधायक धर्मजीत सिंह को चुनाव हराया.

2018 में भाजपा ने एक बार फिर उन पर भरोसा जताते हुए लोरमी विधानसभा से चुनाव मैदान में उतारा, लेकिन जनता कांग्रेस के प्रत्याशी धर्मजीत सिंह के हाथों उन्हें हार मिली. 2023 के विधानसभा चुनाव में बेमेतरा जिले की नवागढ़ विधानसभा के प्रभारी रहे थे.

तोखन साहू का राजनीतिक सफर

1. सन् 1994 में निर्विरोध पंच ग्राम पंचायत सुरजपुरा, जनपद पंचायत लोरमी.
2. 30 जनवरी 2000 में सरपंच पद पर निर्वाचित ग्राम पंचातय सुरजपुरा जनपद पंचायत, लोरमी. 23 जनवरी 2005 में जनपद सदस्य निर्वाचित क्षेत्र क्रं.-18 फुलवारीकला जनपद पंचायत लोरमी.
3. 3 फरवरी 2010 में महिला आरक्षण होने के कारण धर्मपत्नी श्रीमती लीलावती तोखन साहू, जनपद सदस्य निर्वाचित एवं 19 फरवरी 2010 में अध्यक्ष जनपद पंचायत लोरमी के पद पर निर्वाचित.
4. सन् 2012 में सोसायटी चुनाव सिंघनपुरी (लोरमी) में बैंक प्रतिनिधि जिला सहकारी बैंक जिला-बिलासपुर पर निर्वाचित.
5. जिला साहू समाज मुंगेली, के संरक्षक के पद पर मनोनीत.
6. भा.ज.पा. पश्चिम मण्डल लोरमी, जिला-मुंगेली के महामंत्री के पद पर मनोनीत.
7. 08 दिसंबर-2013 में लोरमी से विधानसभा सदस्य के पद पर निर्वाचित.
8. सन् 2015 में संसदीय सचिव छ.ग. शासन कृषि, पशुपालन, मछली पालन, जल संसाधन विभाग.
9. सन् 2014 में छ.ग.वन्य जीव, बोर्ड सदस्य नामांकित.
10. सन् 2015 में खैरागढ़ संगीत विश्व विद्यालय में सदस्य नामांकित. 11. सन् 2018 में लोरमी से भा.ज.पा. विधायक प्रत्याशी.
12. प्रदेश पिछड़ा वर्ग मोर्चा प्रदेश कार्य समिति सदस्य.
13. प्रदेश किसान मोर्चा, प्रदेश कार्य समिति सदस्य.
14. सन् 2023 में विधानसभा प्रभारी, नवागढ़, जिला-बेमेतरा (छ.ग.).

अब महज इतने घंटे में क्लियर होगा क्लेम, जानिए क्यों लगेगा बीमा कंपनी को झटका ?

Health Insurance New Circular: मान लीजिए आप कुछ दिनों से अस्पताल में हैं. डॉक्टर राउंड पर आता है और आपको डिस्चार्ज के लिए फिट घोषित करता है. अब आप घर जाने के लिए अपना बैग पैक करते हैं, तभी अस्पताल का स्टाफ आपको कुछ और समय तक इंतजार करने के लिए कहता है.

दोपहर शाम हो जाती है, लेकिन आपको अस्पताल से छुट्टी नहीं मिलती क्योंकि आपका स्वास्थ्य बीमा दावा अभी तक क्लियर नहीं हुआ है. स्टाफ कहता है कि जब तक बीमाकर्ता बिलों पर हस्ताक्षर नहीं करता तब तक अस्पताल आपको डिस्चार्ज नहीं करेगा.

स्टाफ का कहना है कि अगर कुछ घंटे और लग गए तो आपको एक और रात अस्पताल में बितानी पड़ेगी. इससे आपका अस्पताल का बिल भी बढ़ जाएगा. ऐसा हर रोज कई लोगों के साथ होता है. लोग ठीक तो हो जाते हैं, लेकिन डिस्चार्ज होने के लिए उन्हें घंटों इंतजार करना पड़ता है.

IRDAI ने जारी किया मास्टर सर्कुलर

इस समस्या को देखते हुए भारतीय बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (IRDAI) ने एक मास्टर सर्कुलर जारी किया है. इसमें 55 सर्कुलर को निरस्त कर दिया गया है और स्वास्थ्य बीमा में पॉलिसीधारक के सभी अधिकारों को एक साथ जोड़ दिया गया है.

IRDAI ने कहा कि अस्पताल से डिस्चार्ज रिक्वेस्ट मिलने के 3 घंटे के अंदर बीमा कंपनी को फाइनल ऑथराइजेशन देना होगा. किसी भी परिस्थिति में पॉलिसीधारक को अस्पताल से डिस्चार्ज होने का इंतजार नहीं कराया जा सकता.

अगर पॉलिसीधारक को डिस्चार्ज होने में 3 घंटे से ज्यादा की देरी होती है और अस्पताल अतिरिक्त चार्ज लगाता है तो बीमा कंपनी उस चार्ज को वहन करेगी. इसका बोझ पॉलिसीधारक पर नहीं डाला जा सकता.

नियामक ने कहा कि इलाज के दौरान पॉलिसीधारक की मृत्यु होने की स्थिति में बीमाकर्ता को:

दावा निपटान के अनुरोध पर तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए.
शव को तुरंत अस्पताल से बाहर निकालना चाहिए.

अखिलेश ने पीडीए से जीता मुस्लिमों - दलितों का विश्वास

लखनऊ. उत्तर प्रदेश में अखिलेश यादव ने अपने दम पर समाजवादी पार्टी को जहां नई ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया, वहीं कांग्रेस के साथ गठबंधन को भी कामयाबी की राह पर ला दिया. 'दो लड़कों की जोड़ी' यानी अखिलेश व राहुल गांधी ने पीडीए की बिसात पर समीकरण बिछा कर मुस्लिमों व दलितों का भी विश्वास हासिल कर लिया तो इसके साथ ही उसके लिए कामयाबी की राह भी खुलती गई.

समाजवादी पार्टी लोकसभा चुनाव में भाजपा को टक्कर देते हुए बड़ी ताकत बन कर उभरी है जबकि इंडिया गठबंधन ने यूपी में एनडीए को पीछे छोड़ दिया है. 2019 में महज पांच सीट पर सिमटने वाली सपा ने भाजपा को पछाड़ दिया है. सपा ने 2004 वाला प्रदर्शन फिर एक बार दोहराकर भाजपा को सकते में डाल दिया है. गत विधानसभा चुनाव में साथ रहे स्वामी प्रसाद मौर्या, जयंत चौधरी, ओम प्रकाश राजभर, पल्लवी पटेल, जैसे सहयोगी नेताओं ने सपा का एक एक कर साथ छोड़ दिया. जनवादी पार्टी व महान दल ने सपा को आंखे दिखानी शुरू कर दीं. लेकिन अखिलेश यादव ने किसी की मान मनौव्वल नहीं की.

कांग्रेस को 17 सीटें देकर गठबंधन बचाया

यूपी में इंडिया गठबंधन के तहत सपा कांग्रेस के बीच सीटों को लेकर खासी खींचतान रही पर अंतत अखिलेश कांग्रेस को 17 सीटें दीं. यह निर्णय दोनों के हक में अच्छा गया. कांग्रेस व सपा के साथ आने से दलित व मुस्लिमों में भी वोटिंग को लेकर दुविधा दूर हुई और उन्हें विकल्प मिल गया.

पीडीए की बिसात बिछाई

अखिलेश ने पिछड़ा दलित अल्पसंख्यक यानी पीडीए की बिसात बिछाई. केवल पांच यादव को प्रत्याशी बनाया और ध्रुवीकरण रोकने को केवल चार मुस्लिमों को टिकट दिए. गैर यादव ओबीसी को सर्वाधिक महत्व दिया. सामान्य सीट फैजाबाद पर दलित अवधेश प्रसाद को उतारना सही निर्णय साबित हुआ. अखिलेश ने 'नहीं चाहिए भाजपा' का नारा देकर युवाओं की नाराजगी को आवाज दी.

युवाओं को भा गए सवाल

अखिलेश ने पहले नारा दिया नहीं चाहिए भाजपा. उसके बाद पीडीए का अभियान चलाया. उनकी सभाओं में उमड़ने वाली भीड़ में बड़ी तादाद युवाओं की थी. अखिलेश ने युवाओं को छूने वाले सवाल उठाए. उन्होंने घोषणा पत्र में फ्री-आटा के साथ फ्री-डाटा की बात कही.

Redmi Pad Pro 5G टैबलेट लॉन्च, 10000mAh बड़ी बैटरी के साथ इसमें है 256GB स्टोरेज, जानें कीमत व फीचर्स

ग्लोबली मार्केट में Redmi Pad Pro को लॉन्च करने के बाद Xiaomi ने अब अपने घरेलू मार्केट में इस पैड का 5जी वर्जन लॉन्च कर दिया है. यह टैबलेट शुरुआत में चीन में केवल वाई-फाई कनेक्टिविटी के साथ उपलब्ध था. इस लेटेस्ट पैड में डुअल सिम सपोर्ट मिलेगा, जिसे 5G कनेक्टिवी के साथ जोड़ा गया है. चलिए अब इस 5G वेरिएंट की कीमत, खासियत के बारें में डिटेल से सब कुछ बतातें हैं.

Redmi Pad Pro 5G की कीमत

Redmi Pad Pro 5G के 6GB + 128GB वेरिएंट की कीमत 1,999 युआन (लगभग 23,000 रुपये) है, जबकि 8GB + 256GB वेरिएंट की कीमत 2399 युआन (लगभग 28,000 रुपये) है. यह Dark Grey कलर में आता है. फिलहाल टैबलेट का 5G वेरिएंट चीन में पेश किया गया है. जल्द ही इसके अन्य मार्केट्स में आने की भी संभावना है.

हैवी रैम और स्टोरेज के साथ तगड़ा प्रोसेसर

टैबलेट में 2.4GHz तक का ऑक्टा-कोर स्नैपड्रैगन 7s Gen 2 प्रोसेसर है, जिसे Adreno 710 GPU के साथ जोड़ा गया है. यह 6GB या 8GB LPDDR4X RAM और 128GB या 256GB UFS 2.2 स्टोरेज के आप्शन के साथ आता है. इस स्टोरेज को माइक्रोएसडी कार्ड के जरिए 1.5TB तक बढ़ाया जा सकता है. Redmi Pad Pro 5G, Android 14-बेस्ड HyperOS पर चलता है.

Dolby Atmos साउंड के साथ तगड़ा कैमरा

रेडमी पैड प्रो 5G टैबलेट में 8 मेगापिक्सेल का रियर कैमरा और 8 मेगापिक्सेल का ही फ्रंट कैमरा. इसमें इन-डिस्प्ले फिंगरप्रिंट सेंसर और एक इंफ्रारेड सेंसर शामिल है. दमदार साउंड के लिए, इसमें डॉल्बी एटमॉस सपोर्ट के साथ चार स्पीकर और दो माइक्रोफोन हैं.

टैब में फास्ट चार्जिंग के साथ बड़ी बैटरी भी

इसका डाइमेंशन 280×181.85×7.52 एमएम और वजन केवल 571 ग्राम है. टैब में मिलने वाले कनेक्टिविटी ऑप्शन में ऑप्शनल 5G, 2.4GHz और 5GHz बैंड पर वाई-फाई 6 (802.11 ac), ब्लूटूथ 5.2 और यूएसबी टाइप-सी 2.0 शामिल हैं. इसमें 33W फास्ट चार्जिंग के साथ 10,000mAh की बैटरी है.

उत्तर भारत में फिर गठबंधन की गूंज

इस बार का लोकसभा चुनाव अंकुश लगाने वाला साबित हुआ है. लगातार दो बार अपने बूते बहुमत पाने वाली भाजपा मानो थम गई है. लोगों के मन में चुनाव से पहले कई तरह की आशंकाएं थीं- कहीं हम एकदलीय निरंकुश सरकार की ओर तो नहीं बढ़ रहे? क्या संविधान में मनमर्जी का बदलाव होने जा रहा है? राजस्थान, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों के दलित टोलों में डर था कि यदि संविधान बदल दिया गया, तो क्या उनका आरक्षण खत्म कर दिया जाएगा? उत्तर प्रदेश के राजपूत चिंतित थे कि यदि बेलगाम सरकार आई, तो शायद वह मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को दिल्ली बुला ले?

सवाल राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व भाजपा के आपसी रिश्ते को लेकर भी थे. इस बार कई जगहों पर संघ उस तरह सक्रिय नहीं दिखा, जितना वह पिछले चुनावों तक था. फिर, टिकट बंटवारा भी एक बड़ा मसला रहा. बाहरी लोगों को टिकट देने से पुराने कार्यकर्ता खुश नहीं थे. वे इसे 'भाजपा का कांग्रेसीकरण' कहने लगे.

इन सब विवादों को भाजपा नेतृत्व द्वारा नजरंदाज करने की नीति से यह शक गहराने लगा कि '400 पार' का नारा यूं ही नहीं दिया गया है. लिहाजा, इस जनादेश का संकेत यही है कि गठबंधन के बूते भाजपा सरकार तो बना सकती है, पर उसकी लगाम अब सहयोगी दलों के हाथों में होगी. हालांकि, यहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ जरूर की जानी चाहिए, क्योंकि दस साल के शासन के बाद उनके नाम पर ही वोट मांगे गए और भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनने में सफल रही. मोदी पार्टी का चेहरा न होते, तो भाजपा के लिए इतनी सीटें जुटाना इस बार काफी मुश्किल होता.

इस चुनाव की असली कहानी उत्तर प्रदेश ने लिखी है. बाकी राज्यों का नतीजा काफी कुछ प्रत्याशित है, बेशक कुछ सीटें ऊपर-नीचे हैं. मसलन, महाराष्ट्र में शुरुआत से ही 'इंडिया' ब्लॉक के असरदार रहने के कयास लगाए जा रहे थे, जिसकी वजह थी, उद्धव ठाकरे और शरद पवार के प्रति सहानुभूति. लोगों ने देखा था कि किस तरह से इनकी पार्टियों को तोड़ा गया. यहां तक कि इनके नाम और चुनाव-चिह्न तक छीन लिए गए. इसीलिए, तंत्र व विधायकों की जुगलबंदी पर सहानुभूति की लहर भारी पड़ गई.

पश्चिम बंगाल में भी ममता बनर्जी का प्रदर्शन चौंकाता नहीं है. उन्होंने अकेले लड़कर न सिर्फ अपनी जमीन बचाई, बल्कि भाजपा से कई सीटें छीन लीं. इसी तरह, राजस्थान में यह अंदेशा था कि जाट और राजपूत की नाराजगी एनडीए को भारी पड़ सकती है और वह दिखा भी है. हरियाणा में जाट दो वजहों से सरकार से नाराज थे- किसान आंदोलन और महिला पहलवानों से दुर्व्यवहार. इसका असर नतीजों पर पड़ा. ओडिशा में भी भाजपा ने जो कमाल दिखाया है, उसकी चर्चा पहले से थी. वहां लोकसभा ही नहीं, विधानसभा चुनावों में भी बीजद को करारी मात मिली है.

बिहार की तस्वीर भी अलग नहीं है. यहां मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का राजद छोड़ भाजपा का दामन थामना काम कर गया. गैर यादव, महादलित, पसमांदा मुसलमान जैसे पिछड़े समुदाय नीतीश के साथ रहे हैं, जिसमें सेंध लगाने की कोशिश तेजस्वी यादव ने चुनाव के दौरान की, मगर वह सफल नहीं हो सके. फिर, यहां भाजपा में उत्तर प्रदेश जैसा अंदरखाने कोई विवाद भी नहीं था.

जाहिर है, चौंकाने वाले नतीजे सिर्फ उत्तर प्रदेश से आए हैं. यहां समाजवादी पार्टी इतना अच्छा करेगी या कांग्रेस इतनी सीटें ले आएगी, यह किसी ने नहीं सोचा होगा. इसका एक बड़ा कारण है, सपा का नया प्रयोग. उसने 'एमवाई' का विस्तार किया, यानी मुसलमान व यादव प्रत्याशियों को बहुत कम सीटें दीं. दो दर्जन से अधिक उम्मीदवार उसने गैर-यादव ओबीसी के उतारे, दलित व जाटव को टिकट दिए. यह भी एक वजह है कि दलितों के मत सपा को गए. लगता यही है कि बसपा का आधार उससे छिटक रहा है. माना जा रहा है कि मायावती के 25 फीसदी दलित वोट सपा को मिले हैं, जबकि 10 फीसदी भाजपा को. वैसे, उत्तर प्रदेश में भाजपा की इतनी बुरी स्थिति की एक वजह राजपूतों की नाराजगी भी है. पहले दो चरणों में पश्चिमी उत्तर प्रदेश के राजपूतों ने वोट देने के बजाय घर में रहने का फैसला किया था. नतीजतन, उनको मनाने के लिए भाजपा नेतृत्व को कई दौरे करने पड़े थे.

यह आम चुनाव मतदाताओं के हिंदू-मुसलमान मुद्दे से छिटकने की मुनादी भी करता है. इस बार धर्म के आधार पर ध्रुवीकरण की कई कोशिशें की गईं,

लेकिन उसका जमीन पर कोई असर नहीं दिख रहा. बेशक लोग खुद को धर्म से जोड़ते हैं. यहां तक कि कई जाटवों का चुनाव-पूर्व कहना था कि यदि मायावती किसी मुस्लिम उम्मीदवार को टिकट देती हैं, तो वह भाजपा को वोट देंगे. मगर लगता यही है कि हिंदू-मुसलमान के नाम पर वे अब शायद ही तनाव चाहते हैं.

कांग्रेस के लिए यह नतीजा संजीवनी है. विशेषकर उत्तर प्रदेश में उसे फिर से पांव जमाने का मौका मिल सकता है. अमेठी व रायबरेली घूमते हुए मुझे वीपी सिंह के समय की याद आ रही थी, क्योंकि कांग्रेस नेताओं की हर पंक्ति पर लोग उसी तरह उत्साहित होते दिखते थे, जैसे वीपी सिंह के भाषणों से. तब अंदेशा था कि कांग्रेस इस भीड़ को शायद ही वोट में बदल सकेगी, क्योंकि उसके पास सांगठनिक ढांचा तक नहीं है. पर अमेठी की जीत ठोस संकेत है कि उसका एक कार्यकर्ता किसी मंत्री को मात दे सकता है. लगता है कि पार्टी ने राज्य में अपने पुनरोद्धार की ओर कदम बढ़ा दिए हैं.

साफ है, विपक्ष ने पूरा दमखम दिखाया है. संसद में मजबूत विपक्ष की वापसी कई लोगों को सुकूनदेह लग रही होगी, क्योंकि इससे सरकार और संस्थान, दोनों पर अंकुश लगाने में मदद मिलती है. मगर इसे मोदी सरकार के खिलाफ मोहभंग की शुरुआत मान सकते हैं? इसके लिए फिलहाल हमें और आंकड़ों की जरूरत होगी.

गर्मी में खाएं मखाने का रायता, बढ़ाएगा खाने का स्वाद, सेहत की लिए भी बढ़िया

रायता चाहे जिस चीज का हो सबका दिल जीत लेता है। गर्मियों में तो इसकी विशेष मांग होती है। आज हम बात कर रहे हैं मखाने के रायते की। यह न सिर्फ स्वादिष्ट होता है बल्कि सेहत के लिए भी बेहद फायदेमंद होता है। इस मौसम में हर कोई दही को किसी न किसी रूप में डेली डाइट में चाहता है। दही शरीर को हेल्दी रखने में काफी मददगार होता है। अगर मखाने और दही का कॉम्बिनेशन एक ही रेसिपी में मिल जाए तो क्या कहने। हम आपको मखाने के रायते को बनाने का आसान तरीका बताएंगे। यह पाचन सुधारने की दृष्टि से भी बहुत अच्छी डिश है। इस बार इसे जरूर ट्राई करें और जान जाएं इसका महत्व।

सामग्री

दही – 1 कप, मखाने – 2 कप, रायता मसाला – 1 टी स्पून, लाल मिर्च पाउडर – स्वादानुसार, चाट मसाला – 1/2 टी स्पून, गरम मसाला – 1/4 टी स्पून, देसी घी – 1 टी स्पून, हरा धनिया कटा – 1 टेबल स्पून, नमक – स्वादानुसार

विधि

1– सबसे पहले एक कड़ाही में घी डालकर उसे मीडियम आंच पर गरम करने के लिए रख दें।जब घी पिघल जाए तो उसमें मखाने डालकर भून लें।

2– जब मखानों का रंग हल्का सुनहरा हो जाए तो गैस बंद कर दें और मखानों को एक प्लेट में निकालकर अलग रख दें।जब मखाने ठंडे हो जाएं तो उन्हें मिक्सर में डालकर दरदरा पीस लें। आप चाहें तो खड़ा मखाना भी नेम कर सकते हैं।

3–अब एक बर्तन लें और उसमें दही डालकर अच्छी तरह से फेंट लें। जब दही को फेंट लें उसके बाद उसमें रायता मसाला, चाट मसाला, गरम मसाला, लाल मिर्च पाउडर और नमक डालकर दही में चम्मच की मदद से मिक्स कर दें।

4– अब दही के मिश्रण में दरदरे पिसे मखाने डाल दें और मिला दें।अगर बनने के बाद रायता गाढ़ा लग रहा है तो आवश्यकतानुसार उसमें पानी डाल दें। इसे हरा धनिया पत्ती डालकर गार्निश करें।

इंडिया गठबंधन का आदिवासी सीटों पर कब्जा

रांची. लोकसभा चुनाव 2024 के परिणामों ने पूरे देश के साथ झारखंड को भी चौंकाया है. अंतिम परिणाम ओपिनियन और एग्जिट पोल के उलट रहे. संख्या के लिहाज से देखें तो एनडीए को 14 में से नौ सीटें जबकि इंडिया गठबंधन को पांच सीटें मिली हैं. नतीजे से साफ झलक रहा है कि आदिवासी वोटर इंडिया गठबंधन के साथ रहा क्योंकि राज्य में जिन पांच सीटों पर इंडिया गठबंधन ने जीत दर्ज की वह सभी आदिवासियों के लिए रिजर्व हैं. वहीं एनडीए ने जिन नौ सीटों पर जीत हासिल की वह सामान्य सीटें हैं.

2019 के चुनावों के मुकाबले 2024 में एनडीए तीन सीटों का नुकसान हुआ है. मत प्रतिशत के लिहाज से देखें तो 2019 के चुनाव में एनडीए को 55.29 फीसदी वोट मिले थे, वहीं इस बार एनडीए को (खबर लिखे जाने तक) करीब 47 वोट से संतोष करना पड़ा है. दूसरी ओर इंडिया गठबंधन को लगभग 39.19 फीसदी वोट मिले हैं जो पिछली बार 31.6 के मुकाबले 7.59 ज्यादा है. यहां ध्यान रखने वाली बात यह है कि

2019 के आम चुनावों में बाबूलाल मरांडी के नेतृत्व में जेवीएम ने अलग चुनाव लड़कर पांच प्रतिशत वोट हासिल किए थे. इस बार मरांडी भाजपा के अध्यक्ष हैं और इस लिहाज से एनडीए के मत प्रतिशत का घाटना और भी मायने रखता है. सीटों के लिहाज से देखें जाए तो जहां एक ओर गठबंधन ने सभी आदिवासी आरक्षित सीटों पर अपनी पकड़ मजबूत रखी है. वहीं सामान्य सीटों पर एनडीए अपना गढ़ बचाने में सफल रहा है. इस बार भाजपा ने पांच सीटों पर अपने प्रत्याशी बदले थे, उनमें से चार पर जीत मिली. ने सारे प्रयास किए थे. वहीं इंडिया गठबंधन ने संविधान और लोकतंत्र को बचाने की लड़ाई की जो पटकथा चुनाव के दौरान लिखी उसका प्रभाव निश्चित रूप से नतीजों में दिखा.

कल्पना सोरेन सूबे की सियासत का नया चेहरा

गांडेय विधानसभा उपचुनाव में पूर्व सीएम हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन झारखंड की राजनीति का नया चेहरा बन कर सामने आई हैं. उन्होंने गांडेय उपचुनाव में जीत हासिल कर ली है. हेमंत सोरेन की लड़ाई लड़ रही कल्पना का अब सियासी कद बढ़ना निश्चित है. इंडिया गठबंधन को सही समय का इंतजार है.

कांग्रेस-झामुमो का बढ़ा ग्राफ, दोगुनी हुई सीट

झारखंड में लोकसभा की सभी 14 सीटों के नतीजे आ गये हैं. भाजपा को आठ सीटें, झामुमो को तीन, कांग्रेस को दो और आजसू पार्टी को एक सीट मिली है. 2019 के मुकाबले 2024 के आए परिणाम में जहां भाजपा को तीन सीटों का नुकसान हुआ आठ पर आ गई, वहीं, झामुमो एक से तीन और कांग्रेस एक से दो सीटों पर पहुंच गई. आजसू पार्टी ने गिरिडीह सीट से इस बार भी जीत हासिल की.

कैंसर को दोबारा होने से रोकने वाले तीन अणुओं की खोज

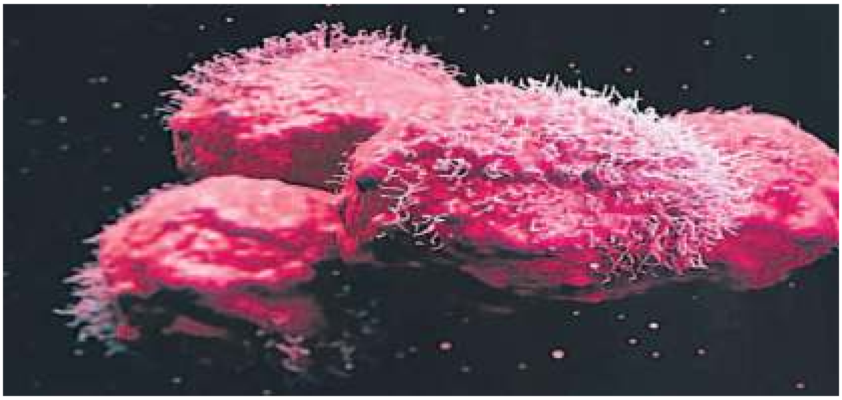

अध्ययन में भारत, फ्रांस और सिंगापुर के शोधकर्ता शामिल थे. कैंसर के उपचार में, डीएनए नष्ट करने वाले एजेंटों का इस्तेमाल कैंसर कोशिकाओ को खत्म करने के लिए किया जाता है. हालांकि, समय के साथ-साथ इन एजेंटों का प्रभाव कम होता जाता है, क्योंकि कैंसर कोशिकाएं क्षतिग्रस्त डीएनए की मरम्मत के लिए तंत्र विकसित करती हैं. इससे एक प्रक्रिया शुरू होती है जिसे आमतौर पर दवाओं के लिए केमोरेसिस्टेंस कहा जाता है, जिससे कैंसर की पुनरावृत्ति और मेटास्टेसिस होती है. यह कैंसर थेरेपी के लिए एक चुनौती है.

इस दल ने काम किया

जैव प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत जीनोमिक्स और इम्यूनोलॉजी विभागों के शोधकर्ताओं ने कैंसर रोधी तीन नए अणुओं की पहचान की है. इनके साथ क्षेत्रीय जैव प्रौद्योगिकी केंद्र (आरसीबी) और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के शोधकर्ताओं ने भी इस परियोजना में भाग लिया, जिसमें वैज्ञानिकों की एक विविध टीम शामिल थी.

कीमोथेरेपी प्रतिरोधी

डॉ. सागर सेनगुप्ता ने बताया कि शोध से कैंसर कोशिकाओं के कीमोथेरेपी के लिए प्रतिरोधी होने का कारण पता चला. केमोरेसिस्टेंस में शामिल प्रोटीन, आरएडी 54 और बीएलएम हैं. आरएडी 54 क्रोमैटिन को रिमॉडलिंग कर जीन को सक्रिय करने में मदद करता है और बीएलएम इस भूमिका में आरएडी 54 की सहायता करता है.

जिम्मेदार जीनों को सक्रिय करने का काम होगा

डॉ. सागर सेनगुप्ता ने बताया, आरएडी 54-बीएलएम कॉम्प्लेक्स को कैंसर कोशिकाओं से कैंसर रोधी दवाओं को हटाने के लिए जिम्मेदार जीनों के एक समूह (इफ्लक्स पंप जीन) को सक्रिय करने के लिए पाया गया, जो कि केमोरेसिस्टेंस में एक महत्वपूर्ण कारक है. टीम ने अणुओं की एक बड़ी लाइब्रेरी की भी जांच की और तीन दवाओं की खोज की. ये दवाएं आरएडी 54-बीएलएम इंटरैक्शन को बाधित करती हैं, कैंसर कोशिकाओं में डीएनए की मरम्मत को कम करती हैं. इस तरह कैंसर कोशिकाओं को कीमोथेरेपी के लिए संवेदनशील बनाती हैं. डॉ. सागर ने कहा, अध्ययन ने एक मॉडल प्रणाली के रूप में कोलन कैंसर पर ध्यान केंद्रित किया और इन आशाजनक यौगिकों की पहचान करने के लिए अनुमोदित दवाओं की भौतिक स्क्रीनिंग शामिल की.

> नई दिल्ली. कैंसर जैसी घातक बीमारी की पुनरावृत्ति से निपटने में सहायक तीन अणुओं की खोज की गई है. भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के वैज्ञनिकों ने यह शोध किया.

ORGALIFE®

Eat Organic, Stay Healthy

CERTIFIED ORGANIC PRODUCTS

Range of 100% Natural & Eco Friendly Products

हिमालयन पिंक सॉल्ट	~~140/-~~	120/-
आर्गेनिक गुड	~~130/-~~	115/-
आर्गेनिक गुड पाउडर	~~130/-~~	115/-
गुड चना	~~150/-~~	135/-
गुड खुरचन	~~115/-~~	94/-
गुड पान	~~140/-~~	125/-
गुड पाचक	~~140/-~~	120/-
टी मसाला	~~175/-~~	160/-
रेड राइस	~~180/-~~	160/-
ब्लैक राइस	~~180/-~~	165/-
ब्राउन राइस	~~175/-~~	155/-
रामजीरा राइस	~~210/-~~	190/-
दुबराज राइस	~~160/-~~	145/-
हर्बल सोप	~~170/-~~	155/-
नारियल तेल	~~560/-~~	545/-
लाल मिर्च पाउडर	~~110/-~~	95/-
A2 घी	~~430/-~~	410/-
आम का अचार	~~175/-~~	154/-
मिक्स दाल	~~130/-~~	115/-
मसूर दाल	~~125/-~~	110/-
चना दाल	~~110/-~~	90/-
मूंग दाल (बिना छिलका)	~~130/-~~	115/-
उड़द दाल (छिलका)	~~130/-~~	115/-
झुरगा	~~125/-~~	110/-
काबूली चना	~~160/-~~	145/-
राजमा जम्मू	~~145/-~~	120/-
मल्टी ग्रेन दलिया	~~110/-~~	85/-
मूंग दाल (छिलका)	~~140/-~~	120/-
सुजी	~~80/-~~	60/-
साबुत चना	~~95/-~~	75/-
गेंहू आटा	~~110/-~~	85/-
चना बेसन	~~115/-~~	90/-
उड़द दाल(बिना छिलका)	~~140/-~~	120/-
अरहर दाल	~~145/-~~	130/-
रागी फ्लोर	~~110/-~~	85/-
राइस पोहा	~~90/-~~	77/-

More Then 100+ Organic Grocery Products

Scan & Shop Now

Add.: Magneto Mall, Basement infront of Smart Bazar, Raipur (C.G.)
E-kart Shop at Spree Walks, Marine Drive, Telibandha, Raipur (C.G.)

विष्णु के सुशासन से
संवर रहा छत्तीसगढ़

सुशासन और समग्र विकास के 6 माह

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री विष्णुदेव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

विकास की नई राह

- कृषक उन्नति से समृद्ध किसान, 3100 रुपए में ख़रीदा धान
- मिला दो वर्षों का 3716 करोड़ रुपए बकाया बोनस
- पीएम आवास से 18 लाख से अधिक परिवारों को अपना मकान, गरीबों का रखा ध्यान
- मुफ्त अनाज से गरीबों का कल्याण, एक करोड़ से अधिक परिवारों को 5 वर्षों तक राशन
- महतारी वंदन से महिलाओं को आर्थिक संबल, प्रतिवर्ष 12,000 रुपए की मदद से 70 लाख महिलाओं को मिला बल
- तेंदूपत्ता मानदेय अब बढ़कर प्रति मानक बोरा 5,500 रुपए भुगतान, आदिवासी का सम्मान
- शासकीय भर्ती आयु सीमा में 5 वर्ष की छूट मिली, युवाओं में चहुँओर खुशी
- भ्रष्टाचार मुक्त पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया सुनिश्चित, युवा रहेगा अब निश्चिंत
- 'नियद नेल्लानार' से माओवादी समस्या का पूर्ण निदान, लड़ाई से आगे बढ़ विकास का विधान
- त्वरित निर्णय- सख्त प्रशासन, विगत 6 माह में, 129 माओवादी ढेर, 488 गिरफ्तार, 431 आत्मसमर्पण
- 'रामलला दर्शन योजना' से श्रद्धालुओं को अयोध्या धाम की निःशुल्क यात्रा का मिल रहा सौभाग्य

RO No. - 12786/44

सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास

Visit us : ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO ChhattisgarhCMO DPRChhattisgarh DPRChhattisgarh www.dprcg.gov.in

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क